सितम्बर–2014 ◆ वर्ष 3 ◆ अंक 4 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

सितम्बर–२०१४

आओ हम सब मिल–जुलकर
इसी कर्म में लग जावें
सत्यार्थ–शिक्षा फैला के
धरती को स्वर्ग बनावें

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १०

हरदम
के व्यंजनों का आधार,
है, एम.डी.एच. मसालों से प्यार।
MDH
मसाले
असली मसाले
सच - सच
Sambhar masala
Garam masala
DEGGI MIRCH
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Pav Bhaji masala
Peacock Kasoori Methi
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग
नवनीत आर्य

व्यवस्थापक
सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆	भारत	विदेश
संरक्षक	११००० रु.	$ 1000
आजीवन	१००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय	४०० रु.	$ 100
वार्षिक	१०० रु.	$ 25
एक प्रति	१० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाउन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत् १९६०८५३११५
भाद्रपद शुक्ल त्रयोदशी
विक्रम संवत् २०७१
दयानन्दाब्द १९०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

September- 2014

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

न्यास १६ समाचार

न्यास १७ समाचार

०४	वेद सुधा
०६	सात समन्दर पार वैदिक धर्म प्रचार
०९	२१ वीं सदी में स्त्री समाज
१२	सत्यार्थप्रकाश पहेली-८
१८	महर्षि दयानन्द का हिन्दी में योगदान
२१	कथा सरित
२२	विद्या और अविद्या
२३	वेद विवेचना
२६	Medical Science in the Vedas
२६	स्वास्थ्य
३०	गृहस्थ धर्म

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ३ अंक - ४

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

चित-प्रसादन के साधन तथा साधक का स्वभाव

चतुरश्चिद्दमानाद्बिभीयादा निधातोः।
न दुरुक्ताय स्पृहयेत्।। - ऋग्वेद १/४१/६

साधक अपने रुचिकर प्रसन्नताकारक स्वभाव को एक मंत्र में स्वीकार करता हुआ कहता है कि- मित्रभाव के मारनेवाले, शाप देनेवाले, आक्रोशयुक्त जन से मैं न बोलूँ, न किसी प्रकार सम्भाषण करूँ प्रत्युत सुख देनेवाले एवं दिव्यगुणों की कामना करनेवाले की सेवा सदा किया करूँ।

वेद चित्त-प्रसादन के उपयोगी व्यवहार का प्रकाशन करता है कि मारने वाले, शाप देनेवाले, विषादि देनेवाले तथा अन्याय से पर-पदार्थों को हरनेवाले, इन चारों प्रकार के मनुष्यों पर विश्वास न करे, इनसे नित्य डरे और दुष्ट वचन कहनेवाले से मित्रता न करे। साधक स्वयं भी इन दुर्गुणों से बचता रहे। मित्रता के लिए आवश्यक है कि माता-पिता से मित्रता करनेवालों को भी मित्रता की भावना से देखता रहे। दूसरों से प्राप्त प्रशंसा से आनन्दित न होकर उसे परमात्मा को समर्पित कर दे। वैरभाव को त्याग, मित्रभाव को बढ़ावे। विद्वान् साधकों का सत्कार किया करे। परमात्मा के समान द्रोहरहित स्वभाव करे। प्रशंसा करने योग्य श्रेष्ठ साधक-विद्वानों की प्रंशसा करे और मित्रों की वाणी तथा धन से सेवा करे। मित्रता को बढ़ाता रहे, जीर्ण न करे, विद्वानों से की हुई मित्रता कभी जीर्ण नहीं होती। मित्रता के प्रेरकों का आदर तथा घातक चोर-द्वेषी पुरुषों की ताड़ना करता रहे।

चित्त-प्रसादन के अन्य साधन

१. अज्ञान से अनादर करनेवाला हो या मारने के लिए प्रेरित हुआ हो, अथवा अपराध करके लज्जित हो रहा हो, साधक उसे क्षमा कर दे, उस पर क्रोध न करे।

२. साधक क्रोधी स्वभाववाले से दूर रहे, जिससे स्वभाव विकृत न हो।

३. परमेश्वर के समान राग-द्वेषरहित होकर प्रेम का व्यवहार करे।

४. दुष्टों से दूर रहे, विद्वानों की निन्दा न करे।

५. सिद्ध योगियों तथा नवीन साधकों से मित्रता रखे।

६. विद्या तथा विनय से सम्पन्न साधक प्रसन्नचित्त हो साधना करे। नीचों के समान, अभद्र व्यवहार न करे। कभी भक्तिरहित न हो, दुष्टों से निर्भीक होकर परमात्मा की स्तुति-प्रार्थनोपासना करता रहे।

७. उपासक भोज्यान्न से, नमस्कारों से, सत्कार से और मधुरवाणी से सेवा करता रहे तो सिद्धि प्राप्त करता है।

८. मारण, मोहन, उच्चाटन, हिंसा, कुत्सित कर्म के लिए साधना न करे। न किसी को शत्रु, चुगलखोर तथा कलंक लगानेवाला बने, न अनिष्ट चिन्तन करे।

९. साधक किसी प्रकार का वर्गभेद न मानकर समान शीलवालों से मैत्री करे।

१०. सौम्य स्वभाव से ही परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। अतः स्वभाव में सदैव सौम्यता रक्खे।

११. साधक का निकलना, दूर जाना, बोलना आदि सारा व्यवहार मधुर हो, किसी के लिए

कष्टदायी न हो।

१२. साधना करते समय कभी लज्जा अनुभव न करे। साधना में हुई प्रवृत्ति को जन्मजन्मान्तरों का सौभाग्य समझे।

१३. चंचल=राजसिक एवं तामसिक आलस्य-प्रमाद वृत्तिवालों से सदैव अलग रहे।

१४. वेदज्ञान का आश्रय लेकर तथा भूतपूर्व योगी एवं वर्तमान योगियों का श्रद्धा-प्रेम से सम्मान एवं अनुसरण करता रहे।

उक्त साधनों के अतिरिक्त यजुर्वेद के अन्तर्गत योगी पुरुषों के कर्म, स्वभाव तथा गुणों का वर्णन विशदरूपेण मिलता है। साथ ही योगविद्या के शिक्षक, शिष्यवर्ग के गुणों, कर्मों एवं स्वभावों का निरूपण भी यत्र-तत्र सन्निहित है। जिज्ञासु वेदों के स्वाध्याय-मनन से तद्गुणों का परिज्ञान प्राप्त कर तदनुकूल आचरण करें।

वैदिक संहिताओं में प्रोक्त चित्त-प्रसादन के अनुपम, अगणित साधनों का महर्षि पतंजलि ने एक सूत्र में अन्तर्भाव किया है। सूत्र में कथित साधनों को व्यासमुनि ने इस प्रकार व्याकृत किया है-

'चित्त के प्रसाधन=निर्मलता के लिए साधक सुख-सम्भोग पूर्ण समस्त प्राणियों से मित्रता करे। दुःखितों पर दया करे। पुण्यात्माओं में हर्ष की भावना तथा पापियों के प्रति उपेक्षा-वृत्ति रखे। प्राणियों के साथ इस प्रकार का व्यवहार करने से साधक में निर्मल-धर्म का उदय होता और चित्त में प्रसन्नता का साम्राज्य छा जाता है; प्रसन्न एवं निर्मल चित्त-स्थितिध्यानादि में परम सहायक होता है। उक्त उपायों से विज्ञानमयकोश के शोधन द्वारा निर्मल प्रज्ञा प्राप्त कर अविद्या-विनाश का उपक्रम करें।

- डॉ. योगेन्द्र पुरुषार्थी
(साभार- वेदों में योगविद्या)

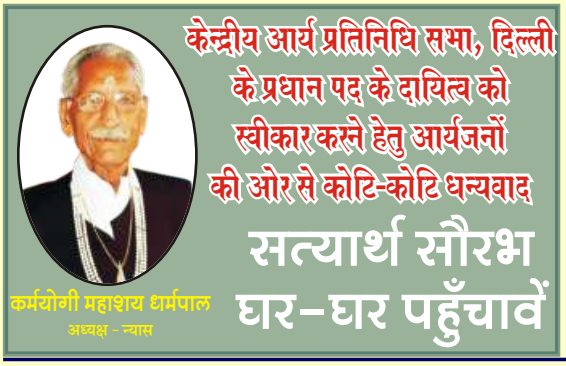

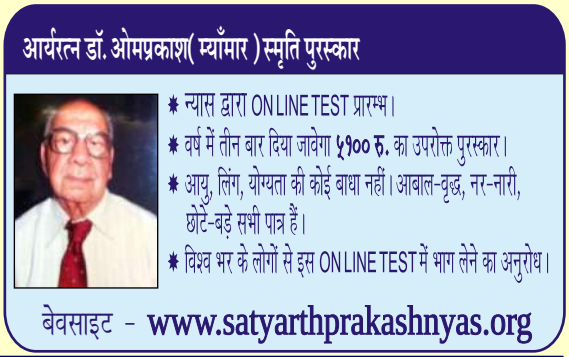

आत्म निवेदन

सात समन्दर पार वैदिक धर्म प्रचार

शिकागो। उत्तरी अमरीका का एक शानदार शहर। कुदरत का अद्भुत चमत्कार। फ्रेश वाटर से लबालब मिशीगन लेक के कारण इण्डस्ट्रीज की भरमार, पर प्रदूषण नाम का नहीं। मकानों के चारों ओर सड़क के किनारे हरियाली ही हरियाली। परन्तु मच्छर, मक्खी देखने से भी नहीं मिलते। गायों के बड़े बड़े फार्म, कुत्ते आदि पालने का शौक, पर एक भी जानवर सड़क पर नहीं दिखाई देता। सफाई ऐसी कि जैसे रोज रात को सड़कें धोई जाती हों। २५ जुलाई को हम इस सुन्दर नगर में, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री, मुम्बई के साथ, सात समन्दर पार वैदिक धर्म ध्वजा को फहराने वाले, चर्च को खरीदकर आर्य समाज की स्थापना करने जैसे अद्भुत काम को अंजाम देने वाले, इस न्यास के संरक्षक, आर्य समाज शिकागोलैण्ड के संस्थापक प्रधान, सुप्रसिद्ध कैंसर विशेषज्ञ डॉ. सुखदेव चन्द जी सोनी के ८०वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम में सम्मिलित होने पहुँचे। न्यास के संरक्षक श्री बी. एल. अग्रवाल एवं उनके सुपुत्र डॉ. राजेश पहले ही पहुँच चुके थे। यह हमारी दूसरी शिकागो यात्रा थी एवं डॉ. सोमदेव जी की पहली। सब कुछ और भी खूबसूरत। आर्य समाज शिकागोलैण्ड नयनाभिराम है। ऊपर नीचे दो बड़े हॉल हैं। ऊपरी हॉल सत्संग सभा के रूप में काम आता है। मंच के ऊपर तीन सुसज्जित वेदियाँ हैं। डॉ. सोनी जी ने मुझे कार्यक्रम का एम. सी. अर्थात् Master of ceremony बना दिया। यह मेरे लिए बिल्कुल नया शब्द था। पर कार्य वैसा ही था जैसा हमारे यहाँ संयोजक/संचालक का होता है।

दिनांक २५ को डॉ. सोनी परिवार की ओर से लगभग ३०० लोगों का डिनर आयोजित किया गया था। मेन्यू, गुणवत्ता तथा विविधता लाजवाब। पर मेरे निकट हैरानी की बात ये थी कि इतने सारे मेहमानों के होने पर भी 'बुके' २-४ ही आए थे। पता चला कि डॉ. सोनी जी ने सभी मेहमानों को निवेदन किया था कि वे कुछ भी उपहार लेकर न आएँ। जो भी चाहें स्वश्रद्धानुसार आर्य समाज को दान दें। हमारे यहाँ तो ऐसे निवेदन के बावजूद भी गुलदस्तों के ढेर इकट्ठे हो जाते हैं। और सहस्रों पुष्प बरबाद होते हैं।

आर्य समाज शिकागो में २६ व २७ को दो दिवसीय यज्ञ के ब्रह्मा गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के अधिष्ठाता पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी थे। इसके अतिरिक्त डॉ. सोमदेव शास्त्री, श्री आशीष दर्शनाचार्य जी, लखनऊ से पधारे पंडित रामकिशन जी, आचार्य धनञ्जय जी, श्री धर्मपाल जी शास्त्री के सारगर्भित प्रवचनों को श्रोताओं से खचाखच भरे सभागार ने करतल ध्वनि से

प्रसिद्ध गायिका मीनू पुरुषोत्तम

आर्य समाज शिकागोलैण्ड का भव्य सभागार

डॉ. हँसमुख शाह व श्रीमती ज्योत्सना शाह

सराहा। हमारे निकट, विख्यात् भारतीय गायिका मीनू पुरुषोत्तम जी द्वारा की गई भजन-रस-वर्षा में स्नान करना, अविस्मरणीय रहेगा। मीनू जी नियमित रूप से आर्य समाज शिकागो के साप्ताहिक सत्संग में भाग लेती रहती हैं।

यहाँ हम हमारे मेजबान शाह परिवार का व श्री हरि दुग्गल का उल्लेख न करें तो कृतघ्नता होगी। प्रायः हम भारतीय यह समझ लेते हैं कि अतिथि सेवा केवल हमें आती है। परन्तु डॉ. हँसमुख शाह तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ज्योत्सना जी ने जिस प्रकार हमें हाथोंहाथ रखा वह वर्णनातीत है। विदेश में बसे भारतीय परिवारों की पारिवारिक तथा सामाजिक संरचना पर डॉ.शाह दम्पती से काफी बातें हुईं। डॉ. शाह रिटायर होकर अपना सारा समय एकल विद्यालय परियोजना के माध्यम से समर्पित कर माँ भारती की सेवा में संलग्न हैं। श्री हरि दुग्गल, उनके सुपुत्र व बेटी ज्योति ने हमें शिकागो-दर्शन कराया। एक अन्तिम बात और, यहाँ हमें ज्ञात हुआ कि डॉ. सुखदेव चन्द जी सोनी तथा सरोज जी शिकागो के भारतीय परिवारों में अतीव प्रशंसा की दृष्टि से देखे जाते हैं। वे उनकी उदार प्रवृत्ति की चर्चा करते थकते नहीं। अस्तु।

दिनांक ३१ जुलाई २०१४ से ३ अगस्त २०१४ में आर्य प्रतिनिधि सभा (Tristate) अमेरिका द्वारा आयोज्य २४वाँ आर्य महासम्मेलन 'न्यूजर्सी' में होना था। हम और डॉ. सोमदेव जी इसमें भाग लेने दिनांक २६ जुलाई को ही पहुँच गए। यहाँ श्री अरुण हाण्डा जी व उनकी बहिन ने भावभीना आतिथ्य प्रदान किया। अरुण जी ने स्वयं ४ घंटे ड्राइव कर हमें न्यूयार्क-दर्शन कराया। उनका आभार। समारोह के केन्द्र बिन्दु सभा के प्रधान डॉ. रमेश गुप्ता थे। इनके नेतृत्व में, श्री 'विश्रुत' (महामंत्री सभा) के संयोजन में समारोह अतीव सफल रहा। २०० से अधिक प्रतिनिधि थे। भारत से भी विद्वद्गण उपस्थित थे। अतीव व्यवस्थित कार्यक्रम में समय की कठोरता से अनुपालना अनुकरणीय थी। विशेष बात

डॉ. रमेश गुप्ता जी के गृह में निर्मित नयनाभिराम वेद मन्दिर

यह थी कि चाय/नाश्ता/लंच/डिनर हेतु ५-६ बार श्रोतागण बाहर जाते थे। पर तुरन्त ही कार्यक्रम में वापस आ जाते थे। यह एक ऐसी बात थी जो भारतवर्ष के कार्यक्रमों में मुझे कम ही देखने को मिली।

समारोह के पूर्व सभा प्रधान डॉ. रमेश गुप्ता जो कि एक सफल Gastroentrologist हैं, ने ३०.७.१४ की सायं को अपने घर यज्ञादि का कार्यक्रम रखा। आज आर्य समाज में युवा पीढ़ी नहीं आ रही इस प्रश्न से चिन्तित और इसका समाधान खोज रहे आर्य नेताओं के समक्ष उपस्थित इस यक्ष प्रश्न का, मेरे विचार में डॉ. रमेश गुप्ता के परिवार में समाधान दिखा। वैदिक विचारों से परिवार के सदस्यों को सप्रयास सम्पृक्त करना ही इसका समाधान है। डॉ. रमेश जी की धर्मपत्नी अमिता जी, पुत्र पुनीत, पुत्रियाँ प्रिया तथा अनुपमा वैदिक-संस्कृति-रस में आकण्ठ पगे दिखे। घर में नयनाभिराम वेद मंदिर, विशाल वैदिक पुस्तकालय, ध्यानकक्ष आदि की उपस्थिति इंगित कर रही थी कि डॉ. रमेश जी ने परिवार में वैदिक विचारधारा को प्रवहमान रखने हेतु प्रयास किया है। यही कारण है कि अनेक विद्वानों की उपस्थिति में पुत्री अनु ने यज्ञ का सम्पादन निःसंकोच कराया। पूरे सम्मेलन में सभी बच्चे तत्परता से व्यवस्थाओं में जुटे रहे। अटलाण्टा से पधारे पं. गिरि जी का परिवार भी इसी श्रेणी में आता है। ऐसे ही प्रयास हम लोगों को करने होंगे। श्री गिरीश जी खोसला जी के पुत्र भुवनेश खोसला व विश्रुत जी का परिवार भी इसी दिशा में प्रत्यक्ष उदाहरण है। समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से इसके उपप्रधान माननीय सुरेश चन्द्र अग्रवाल उपस्थित थे। उन्होंने सभा द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों की विस्तृत सूचना दी। डॉ. रमेश गुप्ता, डॉ. सूर्या नन्दा, डॉ. चन्दोरा, श्री अमर ऐरी आदि के शोधपत्रों तथा डॉ. सोमदेव शास्त्री, श्री चन्द्रशेखर शास्त्री, स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री अजय शास्त्री, योगाचार्य आदि विद्वानों के प्रवचनों ने समारोह को ऊँचाइयाँ प्रदान कीं।

एक बात और सारे कार्यक्रम में लगभग ५०-६० युवाओं ने भाग लिया, सुन्दर प्रस्तुतियाँ दीं। श्रीमती देवी जी निर्देशन में Arya spritual centre न्यूयार्क में अनेक युवा तैयार हो रहे हैं। डॉ. सतीश जी के नेतृत्व में अनेक युवा तैयार हो रहे हैं। यह सब अतीव प्रेरणादायी है।

प्रभु कृपा करे वैदिक धर्म पारिवारिक धर्म बने इस तरफ हम सब प्रयत्नशील हों।

- अशोक आर्य

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप "५.६X९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में

₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

उपहार स्वरूप कलैण्डर देने की तिथि बढ़ाई गई

दिसम्बर १४ तक आजीवन सदस्य बनने वालों को १००रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर उपहार स्वरूप दिया जावेगा (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला)। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया जा रहा है।

२१ वीं सदी में स्त्री समाज के बदलते सरोकार

कृष्ण कुमार यादव

भारत में नारी को पूजनीय माना गया है। वैदिक काल से ही नारी विभिन्न रूपों में सम्मानजनक स्थिति प्राप्त करती आ रही है। नारी की सुकोमलता, सौन्दर्य, लज्जा व स्नेहिल स्वभाव सदैव से इसके आभूषण रहे हैं पर दुर्भाग्यवश इन्हीं गुणों के कारण उसके साथ बार-बार छल भी हुआ है। समाज की सामन्तवादी सोच ने नारी की आन्तरिकता की उपेक्षा कर उसकी भौतिक काया एवं बाहरी रूप-रंग को ही आधार बनाया। आज जहाँ पुरुष की शुचिता उसके सम्पूर्ण व्यक्तित्व के आधार पर मापी जाती है वहीं नारी की शुचिता अंग विशेष के आधार पर मापी जाती है।

प्राचीन काल से ही जहाँ नारी को एक तरफ समाज में प्रतिष्ठा मिली, वहीं दूसरी तरफ वह बर्बरता का शिकार हुई। तुलसीदास ने तो नारी को ताड़ना का अधिकारी बताकर पशु के समकक्ष खड़ा कर दिया-

'ढोल गँवार, शूद्र, पशु नारी
ये सब ताड़न के अधिकारी।'

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने पत्नी सीता के अग्निपरीक्षा में खरे उतरने के बाद भी एक धोबी के कहने पर धोखे से अपनी पत्नी को घर से निर्वासित कर दिया। (?- सं.) सती प्रथा की आड़ में तमाम नवयुवतियों को मृत पति के साथ चिता में जिन्दा भस्म कर दिया गया। तमाम राजाओं की हैवानियत तब तक पूरी नहीं होती थी जब तक वे पराजित राजाओं की रानियों को अपने हरम का हिस्सा नहीं बना लेते थे। जौहर प्रथा इसी का नतीजा थी। यह सब तो बीते युग की बातें हैं, वर्तमान दौर में भी इस तरह की व्यथायें देखी और सुनी जा सकती हैं। बिहार में मुसहर जाति की एक सांसद को टी.टी. ने ट्रेन के वातानुकूलित कोच से परिचय देने के बावजूद इसलिए बाहर निकाल दिया क्योंकि वह वेशभूषा से वातानुकूलित कोच में बैठने लायक नहीं लगती थी। याद कीजिये दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजों द्वारा गाँधी जी के ट्रेन के प्रथम श्रेणी के डिब्बे से बाहर निकालने का दृश्य।

देवदासी प्रथा के नाम पर कुँवारी कन्या को भगवान के दरबार में सौंप देना और तत्पश्चात् मंदिर के पुरोहित द्वारा कन्या के साथ संभोग करना जैसी घटनायें भी कुछेक देशों में देखी जा सकती हैं। पंचायत संस्थाओं में निम्न वर्ग की महिलाओं को आरक्षण मिलने के साथ ही देश के कई क्षेत्रों में निर्वाचित सरपंचों के साथ बदसलूकी की घटनायें अखबारों की सुर्खियाँ बनीं। मध्यप्रदेश के पन्ना जिले में हुआ 'सती काण्ड' अभी बहुत पुराना नहीं हुआ है। इक्कीसवीं सदी की ओर उन्मुख राष्ट्र की गर्वोक्ति घोषणाओं के साथ ही अखबारों में नित्य नाबालिगों के साथ दुष्कर्म की घटनायें छपती रहती हैं। मुम्बई की लोकल ट्रेन में एक वहशी द्वारा पाँच-छः यात्रियों के सामने एक बालिका से बलात्कार करना और उन यात्रियों का चुपचाप तमाशा देखना क्या इंगित करता है? सभ्य समाज का दर्जा पा चुकने के बाद भी घर की महिलाओं से बलात्कार कर बदला चुकाने का पाशविक अंदाज नहीं बदला है। विश्व के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र एवं लोकतंत्र व सभ्यता के स्वयंभू रक्षक अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन भी अपने कार्यालय की एक अदना सी महिला कर्मचारी मोनिका लेविंस्की के साथ अंतरंग क्षणों का लोभ नहीं छोड़ सके। एक सभ्य समाज की ये असभ्य घटनायें हमें कहाँ ले जा रही हैं?

आधुनिक समाज संक्रमणकालीन दौर से गुजर रहा है। आधुनिकता के नाम पर सफलता हेतु शार्टकट रास्ते अपनाना, स्वतंत्रता के नाम पर उन्मुक्तता का पक्ष-पोषण करना इसकी विशेषतायें बन चुकी हैं। 'आई डोन्ट केयर' की संस्कृति फलने फूलने लगी है। शारीरिक वर्जनायें खत्म होती जा रही हैं। गली मुहल्लों में तेजी से बढ़ता सौन्दर्य का बाजार, ब्यूटी-क्वीन प्रतियोगिताओं की भरमार कुछ ही

समय में सब कुछ पा लेने की महत्वाकांक्षा, विज्ञापन के नाम पर नारी मॉडलों के शरीर का प्रदर्शन, फिल्मों और धारावाहिकों में रिश्तों के तेजी से टूटने का प्रचलन एवं कम होते कपड़े किस आधुनिकता व स्वतंत्रता के परिचायक हैं? क्या भारतीय संस्कृति अपनी मूल आस्थाओं को छोड़कर उस पाश्चात्य संस्कृति की तरफ उन्मुख हो रही है, जहाँ बात-बात में नारी स्वतंत्रता के नाम पर छाती उघाड़ देना फैशन बन गया है?

इस संक्रमण काल के बीच २१वीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में एक ऐसा वर्ग उभरा जो अपनी मुक्ति, शारीरिक वर्जनाओं को तोड़ने में नहीं अपितु खोखली सामाजिक धार्मिक रूढ़ियों को तोड़ने में देखता है। इनकी शक्लो-सूरत और हैसियत पर मत जाइये। ये न तो फेमिनिस्ट के रूप में नारी आन्दोलनों से जुड़ी हैं और न पश्चिमी देशों की उन नारियों की तरह हैं जो स्वतंत्रता के नाम पर छाती उघाड़कर प्रदर्शन करती हैं। न ही इनके साथ किसी बड़े घराने या कॉरपोरेट जगत् या राजनीतिक दल का नाम जुड़ा हुआ है और न ही ये कोई बड़े-बड़े दावे करती हैं। ये वो महिलायें हैं जो हमारे पास पड़ौस की और हमारे बीच की हैं, जिनसे हम न जाने कितने बार रूबरू हुए होंगे पर हमें उनकी खासियत का पता ही नहीं। एक लम्बे समय में धर्मशास्त्रों और रूढ़ियों के नाम पर इन्हें यही बताया जाता रहा कि फलाँ काम तुम्हारे लिए वर्जित है और यदि तुम ऐसा करने का प्रयास करोगी तो तुम्हारे ऊपर अपशकुन व ईश्वरीय प्रकोप का खतरा मंडरायेगा। पर ये औरों से अलग हैं क्योंकि वर्जनाओं को तोड़कर एक अलग लीक बनाना ही इनकी खासियत है। पाश्चात्य सभ्यता के समर्थक कुछ लोगों को नारी स्वतंत्रता का रास्ता दैहिक वर्जनाओं को तोड़ने और उन्मुक्तता में दिखा। नतीजतन, गली-गली में कुकुरमुत्तों की तरह सौन्दर्य प्रतियोगिताओं के आयोजन, मॉडल बनने की होड़, फिल्मों में काम पाने हेतु सर्वस्व न्यौछावर कर देने वालों की बढ़ती भीड़.....पर समाज का यह वर्ग ऐसा है जो अभी भी सिर से पाँव तक पूरे कपड़े पहन अपनी बौद्धिकता और जीवटता के दम पर समाज की रूढ़िगत वर्जनाओं को तोड़ने का साहस रखता है।

कर्मकाण्डों के लिए विख्यात् बनारस की लड़कियों ने तमाम रूढ़िगत वर्जनाओं और परम्पराओं को बहुत पीछे धकेल कर कुछ नये मापदण्ड स्थापित किए हैं। कर्मकाण्ड का सबसे प्रमुख तत्व पुरोहिती है और पांडित्य में बनारस का कोई सानी नहीं। प्राचीन काल से ही यहाँ पंडितों ने दुनिया भर में अपनी धाक जमाई है। प्राचीन काल में जहाँ लोमशा एवं लोपामुद्रा आदि नारियों ने ऋग्वेद के अनेक सूक्तों की रचना करके मैत्रेयी, गार्गी, शाश्वती, घोषा, अदिति इत्यादि विदुषियों ने अपने ज्ञान से तबके तत्वज्ञानी पुरुषों को कायल बना रखा था, उसी परम्परा में अब पुरुष पुराहितों की परम्परा को बनारस की लड़कियों ने तोड़ दिया है। तुलसीपुर स्थित पाणिनी कन्या महाविद्यालय से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण कई लड़कियाँ अब लोगों का विवाह करवा रही हैं और यह जरूरी नहीं कि वे ब्राह्मण ही हों।

आचार्या नन्दिता शास्त्री

महाविद्यालय की आचार्या नंदिता शास्त्री बडे गर्व से बताती हैं कि विवाह कराने के लिए उनकी छात्राओं को बनारस ही नहीं वरन् दूर-दूर से लोग आमंत्रित कर रहे हैं। हैदराबाद में बसी यहाँ की पूर्व छात्रा मैत्रेयी को वैदिक रीति से विवाह कराने के लिए अमेरिका तक से आमंत्रण आ चुके हैं। जब इन छात्राओं ने आरम्भ में यह कार्य आरम्भ किया तो इनका विरोध करने के लिए परम्परागत पंडितों ने वर व कन्या पक्ष को शास्त्रों से उद्धरण देकर काफी भड़काया पर अब वही पंडित इन लड़कियों का लोहा मानने लगे हैं। कारण-मंत्रों का शुद्ध उच्चारण उसकी सम्यक् व्याख्या और वैवाहिक संस्कार की सभी रस्मों का पालन करवाने में लड़कियाँ परम्परागत पंडितों से कहीं आगे हैं। आम तौर पर कम पढ़े-लिखे पंडित विवाहों में शुद्ध मंत्र का उच्चारण तक नहीं कर पाते। अब ये छात्रायें विवाह ही नहीं शांति यज्ञ, गृहप्रवेश, मुण्डन, नामकरण और यज्ञोपवीत भी करा रही हैं। ऐसा नहीं है कि यह क्रांतिकारी बदलाव सिर्फ बनारस तक ही सीमित है वरन् देश के अन्य भागों में भी इस बदलाव को महसूस किया जाने लगा है। औद्योगिक महानगर कानपुर में

डॉ. आशारानी राय

कानपुर विद्या मंदिर डिग्री कॉलेज की प्राचार्या डॉ.आशारानी राय वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पुरोहिती का कार्य करती हैं। उन्होंने जब छात्राओं का सार्वजनिक रूप से वेद-पाठ आरम्भ कराया तो व्यापक विरोध भी झेलना पड़ा। यहाँ तक कि एक शंकराचार्य ने इसे वेद विरुद्ध तक घोषित कर दिया। तब आशारानी ने हार नहीं मानी और नतीजतन आज उनकी तमाम छात्रायें कर्मकाण्ड कराने लगी हैं। हरिद्वार में कनखल स्थित माँ योगशक्ति धाम की अधिष्ठाता माँ योग शक्ति ने अमेरिका में रहने वाली भारतीय मूल की साध्वी माँ ज्योतिषानन्दन को जगद्गुरु शंकराचार्य के समकक्ष पार्वत्याचार्य की उपाधि से अलंकृत किया तो गुस्साये साधु सन्तों ने किसी महिला को यह उपाधि देने के विरोध में जमकर हंगामा किया। सिर्फ घरेलू कर्मकाण्डों तक ही क्यों, माता-पिता के अंतिम संस्कार से लेकर तर्पण और पितरों के श्राद्ध तक करने का साहस भी इन लड़कियों ने किया है, जिसे महिलाओं के लिए सर्वथा निषिद्ध माना जाता रहा है। संयोग से इसकी शुरुआत भी कर्मकाण्डों के लिए विख्यात् बनारस से ही हुई।

इस दिशा में सुनीति गाडगिल ने अलख जगाई जिन्होंने विवाह, पूजा, यज्ञ आदि करवाने में ही भूमिका नहीं निभाई वरन् श्राद्ध कर्म भी करवाकर मिसाल कायम की। बनारस

के ही पाण्डेयपुर क्षेत्र की निवासी तनू उर्फ वन्दना जायसवाल, मंडुवाडीह की लक्ष्मीणा देवी, नगर निगम के सफाईकर्मी रहे गोलगड्ढ़ा निवासी मुन्ना की विधवा बीदा देवी और भेलूपुर की महिला चित्रकार व देश में कला की प्रोफेसर रही डॉ. अलका मुखर्जी ने परिवार में किसी अन्य पुरुष सदस्य के न रहने पर अपनी माँ, पिता और पति का अंतिम संस्कार धार्मिक क्रियाओं के बीच विधिवत् सम्पन्न किया। वन्दना जायसवाल ने घंट इत्यादि बाँधकर नित्य घाट पर अपनी माँ का तर्पण भी किया। अब तो इस सामाजिक

बदलाव की बयार का असर देश के अन्य भागों में भी दिखाई पड़ने लगा। तभी तो कानपुर की डॉ.आशारानी राय महिलाओं के लिए सर्वथा निषिद्ध श्मशान घाट पर अंतिम संस्कार सम्पन्न कराने से नहीं हिचकतीं। अपने पिता और श्वसुर का अंतिम संस्कार भी स्वयं उन्होंने ही सम्पन्न किया। यही नहीं कुछेक समय पहले तक प्रयाग के रसूलाबाद घाट पर महाराजिन बुआ नामक महिला श्मशानघाट में वैदिक रीति से अंतिम संस्कार सम्पन्न कराती थीं। राजस्थान के भीलवाड़ा में एक ७२ वर्षीया विधवा की मृत्यु पर उसकी सात बेटियों ने मिलकर अर्थी को कंधा दिया तथा अंतिम संस्कार के लिए चिता को मुखाग्नि दी और पिण्डदान किया। परिवार में बेटों के न होने पर लोगों ने बड़े दामाद से मुखाग्नि दिलवाने का प्रयास किया पर सातों बेटियों ने कहा कि उनकी माँ ने बेटा न पैदा होने पर बेटियों को ही बेटों की तरह पाला तथा किसी भी तरह की कमी नहीं होने दी। हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले की दलित महिला प्रेमी देवी ने तो अपने पति की अर्थी को बेटों को कन्धा तक नहीं लगाने दिया और अर्थी को कंधा देने की जिद करने पर उन्हें धक्के मारकर घर से निकाल दिया। उसने कहा कि मेरे पति के जिन्दा होने पर इन बेटों ने कभी हमारी सेवा नहीं की और न ही रोजमर्रा के खर्च के लिए कोई इन्तजाम किया और ऐसे में पति का निर्देश था कि इन आवारा कलयुगी बेटों को मेरी अर्थी में कंधा न लगाने दिया जाये। अंततः अर्थी को दोनों बहुओं व पड़ोस की दो अन्य औरतों ने कंधा दिया और मुखाग्नि उसके चार पोतों ने दी।

इसी प्रकार गोरखपुर स्थित सहजनवां के दीनदयाल उपाध्याय महिला विद्यालय में स्नातक की विकलांग छात्रा

बुधवन्त सिंह ने अपने पिता की अर्थी को अपने हाथों से सजाया और कंधा देने वालों के अभाव में ठेले पर रखकर श्मशान घाट में ले जाकर विधिवत् मुखाग्नि देकर अपना कर्तव्य निभाया। बांदा में निर्मला गर्ग नामक महिला ने पुत्र के होते हुए भी अपने पति की चिता को आग दी तो शाहजहाँपुर में पेशे से इंजीनियर शिप्रा नामक लड़की ने सगाई के अगले ही दिन दिवंगत हुए अपने पिता की अर्थी को न केवल मेंहदी रचे हाथों से कंधों पर धरा बल्कि उन्हें मुखाग्नि देकर रूढ़ियों को भी ललकारा। धार्मिक मान्यताओं पर विश्वास करें तो अंतिम संस्कार कोई भी सम्पन्न करा सकता है किन्तु अदृश्य की उत्पत्ति का अधिकार शास्त्रों में पुत्र और पौत्र के अलावा राजा व ब्राह्मण को ही होता है। भले ही धर्म के पुरोधा मानें कि शवदाह के बाद का काम ब्राह्मण ही करेगा वरना आत्मा भटकेगी और अगले जन्म में शरीर का अंग प्रत्यंग भी ठीक ठाक नहीं होगा पर इन महिलाओं की मानें तो यह पुरुष प्रधान पितृसत्तात्मक समाज की सोच है जो सारे पुण्य अकेले लूटना चाहता है। हिमाचल प्रदेश की घटना समाज के सामने यह भी सवाल खड़ा करती है कि अपने माँ-बाप की देखरेख न करने वाले बेटों को धार्मिक मान्यताओं के नाम पर माँ-बाप की अर्थी को कंधा देने का क्या नैतिक अधिकार है? निश्चिततः उस निरक्षर दलित महिला ने इसी बहाने माँ-बाप के प्रति सन्तानों को दायित्व बोध का पाठ भी पढ़ाया। क्रमशः .....

निदेशक डाक सेवाएँ, इलाहाबाद परिक्षेत्र
इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश- २११००१

सत्यार्थप्रकाश पहेली-८

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो आत्मयोगी, विद्वान् मुक्ति की इच्छा करने वाले मुक्त और धर्मात्माओं का स्वीकार कर्त्ता अथवा जो शिष्ट मुमुक्षु, मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है, इससे उस ईश्वर की यह संज्ञा है।
२. जो सब प्राणियों के कर्मफल देने की व्यवस्था करता और सब अन्यायों से पृथक् रहता है, इसलिये परमात्मा का नाम है।
३. मंगलमय और सबका कल्याणकर्त्ता होने से उस परमात्मा का नाम है।
४. जो सबका रक्षक, जैसा पिता अपने सन्तानों पर सदा कृपालु होकर उनकी उन्नति चाहता है, वैसे ही परमेश्वर सब जीवों की उन्नति चाहता है, इससे उस का नाम है।
५. दुष्टों को दंड देके रुलाने से उस परमात्मा का नाम है।
६. जो चराऽचर जगत् का धारण जीवन और प्रलय करता और सब बलवानों से बलवान है, इससे उस ईश्वर का नाम है।
७. जिसमें सब भूत प्राणी होते हैं, इसलिये ईश्वर का नाम है।
८. सब का पालन करने से उस परमात्मा का नाम है।
९. जो सत्य आचार का ग्रहण कराने हारा और सब विद्याओं की प्राप्ति का हेतु होके सब विद्या प्राप्त कराता है, इससे परमेश्वर का नाम है।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- "अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ" एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अक्टूबर २०१४

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमल सूद, पाण्डाघाट, श्रीमती सुमन सूद, सोलन, माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर

भारत के जगद्गुरु होने के अर्थ व उपाय क्या हैं?

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

सोलहवीं लोकसभा के चुनाव ने भारत को एक महान् देशभक्त नेतृत्व श्री नरेन्द्र मोदी के रूप में प्रदान किया है, जिन्होंने काशी में भारत को जगद्गुरु बनाने की इच्छा का संकेत करते हुए कहा था, "जब भारत जगद्गुरु था तब काशी नगर राष्ट्रगुरु था और यदि भारत को पुनः जगद्गुरु बनाना है तो काशी को राष्ट्रगुरु बनाना होगा।" काशी को राष्ट्रगुरु बनने का संकेत स्पष्ट है कि भारत की प्राचीन वैदिक विरासत व देववाणी संस्कृत भाषा का पुनरोदय होने से ही यह राष्ट्रगुरु बन सकता है। इधर श्री मोदी के मन्त्रिमण्डल की एक सदस्या श्रीमती स्मृति ईरानी जिन पर भारत के मानव संसाधन विकास मंत्रालय का महत्वपूर्ण दायित्व है, ने वैदिक साहित्य पढ़ाने की वकालत की है। यह देश के लिए बहुत ही शुभ संकेत है। यहाँ कुछ कथित प्रबुद्ध जनों को श्री मोदी के कथनों में परस्पर विरोध प्रतीत हो सकता है। उनकी दृष्टि में मोदी जी एक ओर अत्याधुनिक विज्ञान, तकनीक के द्वारा राष्ट्र को अमेरिका, चीन व यूरोपीय देशों की बराबरी पर लाने की बात करते हैं तो दूसरी ओर वे भारत की प्राचीन परम्परा के पुनरोदय की बात करते हैं। क्या यह परस्पर विरोध नहीं है?

अंग्रेजी भाषा के एकछत्र विश्वव्यापी शासन तथा वर्तमान व टैक्नोलॉजी के इस युग में वेदादि की बात करना कहाँ तक युक्ति संगत है, वह भी वेदादि शास्त्र व संस्कृत भाषा के बल पर भारत को विश्व का गुरु बनाने का स्वप्न देखना व दिखाना कहाँ तक उचित है, यह अवश्यमेव विचारणीय है। वर्तमान विश्व में तो दूर की बात है, अपने देश में भी इस प्रकार की बातों पर प्रबुद्ध वर्ग विश्वास नहीं करता। मेरी दृष्टि में इसके दो कारण हैं। प्रथम यह कि भारत का नागरिक विशेषकर प्रबुद्ध युवा तन से भारतीय तथा मन व आत्मा से पूर्णतः मैकाले का भक्त हो चुका है। उसे भारतीयता की वह कोई बात अच्छी नहीं लगती जो पूर्व काल की संस्कृति, सभ्यता व शिक्षा की समर्थक हो। दूसरा कारण यह भी है कि भारतीय वैदिक विद्या वा संस्कृत भाषा की वकालत करने वालों ने कोई ऐसा महत्वपूर्ण चमत्कार वर्तमान समय में नहीं किया, जिसे पाश्चात्य विद्या विज्ञान के सम्मुख कुछ भी महत्व मिल सके। बड़े-बड़े कथित वैदिक विद्वान्, संस्कृत भाषा के पण्डित, दर्शनाचार्य सभी पाश्चात्य विज्ञान व टैक्नोलोजी के सम्मुख नतशिर होकर उनका सगर्व प्रयोग कर रहे हैं। वेद, दर्शन आदि का नाम लेकर जो संस्थाएँ चल रही हैं, जिन विद्वानों की आजीविका चल रही है, उनके बच्चे भी संस्कृत वा वैदिक विद्या को नहीं पढ़ते। पिता वा गुरु व नेता संस्कृत भाषा व आर्ष विद्या की बात तो करते हैं परन्तु पुत्र, शिष्य व अनुयायी अंग्रेजी भाषा व पाश्चात्य मैकाले की शैली की शिक्षा न केवल देश अपितु विदेश में जा-जाकर ग्रहण करते हैं, तब वेदादि शास्त्रों व संस्कृत भाषा को कौन पढ़ेगा और कैसे इससे भारत को विश्व के उच्च विकसित विज्ञान का गुरु बनाया जा सकेगा? यह बात गम्भीरता से सोचने का अवसर किसी के पास नहीं है। यदि श्री मोदी आधुनिक विज्ञान व टैक्नोलोजी का बहु आयामी विकास करके स्पर्धा में चीन, अमेरिका, फ्रांस, जापान व जर्मनी जैसे विकसित देशों से आगे जाकर भारत को जगद्गुरु बनाने की बात करते हैं तब भी जगद्गुरु का स्वप्न पूर्ण नहीं होगा। भले ही हम स्वच्छ प्रशासन, प्रबल पुरुषार्थ व भ्रष्टाचार मुक्त समाज बनाकर विश्व में सर्वोत्कृष्ट कम्प्यूटर, अन्तरमहाद्वीपीय मिसाइलें, परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, न्यूट्रॉन बम जैसे घातक अस्त्र बना लें। ऐलोपैथी चिकित्सा, अन्तरिक्ष विज्ञान, कृषि विज्ञान आदि में क्रान्तिकारी विकास करके भारत की शिक्षा पद्धति को उच्चतम शिखर पर पहुँचा कर ऐसे विश्वविद्यालयों, आई.आई.टी. आई.आई.एम. व ऐम्स जैसे शिक्षण संस्थानों को विश्व में सर्वोत्कृष्ट स्थान दिलाने में कभी सफल हो जायें। हमारा 'इसरो' अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी 'नासा' को पीछे छोड़ दे और भले ही हम विश्व की सबसे बड़ी प्रयोगशाला 'सर्न' से बड़ी प्रयोगशाला बनाकर संसार के सभी देशों के मार्गदर्शक व नेता बन जाऐं परन्तु नैतिकता की दृष्टि से भारत को जगद्गुरु बनने हेतु यह पर्याप्त योग्यता व सामर्थ्य नहीं होगी। आज भारत को आर्थिक महाशक्ति व आध्यात्मिक महाशक्ति बनाने की चर्चा भी कुछ उत्साही महानुभाव विभिन्न चैनलों से करते रहते हैं परन्तु मुझे लगता है कि जगद्गुरु, महाशक्ति, आध्यात्मिक व वैदिक

सम्पदा इन चार शब्दों का यथार्थ भाव अभी तक समझा नहीं गया है। सस्ते सुन्दर स्वप्न देखने व दिखाने से भारत जगद्गुरु नहीं बन पायेगा। हाँ, मैं मोदी जी सहित ऐसे सभी देशभक्तों की इच्छा व प्रयास की सराहना अवश्य करता हूँ कि देश में ऐसा एक प्रधानमंत्री तो बना जो देश के उत्कर्ष की, उसे जगद्गुरु बनाने की बात तो करता है। प्रबल इच्छा तो करता है। जब देश के नेतृत्व की प्रबल इच्छा हो और ईमानदारी से अफसरशाही उस पर अमल भी करे, देश की जनता पूर्ण सहयोग करे तो भारत का जगद्गुरु बनना असम्भव तो नहीं है।

अब मैं उपर्युक्त उस बिन्दु पर आता हूँ कि देश को महान् वैज्ञानिक व आर्थिक शक्ति बनाने पर भी जगद्गुरु का पद हमारे देश को क्यों नहीं मिल सकता? इस विषय में मेरा मत है कि हम इन क्षेत्रों में जो भी उन्नति करेंगे, जो भी पढ़ेंगे वा पढ़ायेंगे, उन सब पर पश्चिमी वैज्ञानिकों व अर्थशास्त्रियों की ही छाया होगी। उन्हीं का ही पढ़ेंगे फिर भले ही हम उनसे आगे क्यों न बढ़ जायें। आज हमारी पीढ़ी जो भी पढ़ रही है, उसमें आयुर्वेद, हिन्दी, संस्कृत भाषा के अतिरिक्त कोई भी ऐसा विषय नहीं है, जिसका मूल प्राचीन भारतीय विद्या से सम्बन्ध हो, जिनकी पाठ्य पुस्तकों में प्राचीन भारतीय विद्वानों, ऋषियों का नाम भी विद्यमान हो। हाँ, राजनीति शास्त्र व समाजशास्त्र आदि की कुछ पुस्तकों में भगवान् मनु आदि का नाम मिल सकता है। वर्तमान विद्वानों में महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द आदि का नाम मिल सकता है। विज्ञान की पुस्तकों में सी.वी. रमन, सत्येन्द्रनाथ बोस, मेघनाथ साहा, होमी भाभा, जगदीशचन्द बसु आदि भारतीय वैज्ञानिक तथा विदेश में रहने वाले भारतीयों में से चन्द्रशेखर सुब्रह्मण्यम, हरगोविन्द खुराना आदि कुछ वैज्ञानिकों के नाम व उनके सिद्धान्त हम पढ़ सकते हैं परन्तु इनके वैज्ञानिक बनने के पीछे कोई भारतीय प्राचीन विज्ञान कारण नहीं था बल्कि ये उसी विद्या को पढ़े थे, जिसको हमारे देशभक्त मैकाले की पाश्चात्य शिक्षा पद्धति नाम देकर निन्दा करते हैं। भारत में जो भी देशभक्त वा वेदभक्त कहाने वाले सामाजिक संगठन हैं, वे अपने विद्यालयों में वही पढ़ाते हैं, जिसकी वे मंच पर निन्दा करते हैं। आज वेद, दर्शन, ब्राह्मणग्रन्थ आदि का जो स्वरूप भारत में पढ़ा वा पढ़ाया जा रहा है, क्या उसके आधार पर हम ऐसे वैज्ञानिक उत्पन्न कर सकते हैं? यदि नहीं तो भारत को कैसे जगद्गुरु बनाया जा सकता है?ऐसी स्थिति में यह विचार करना आवश्यक है कि भारत के जगद्गुरु होने का अर्थ क्या है? इस विषय पर मेरा विचार यह है कि भारत के जगद्गुरु का अर्थ जानने से पूर्व हम यह जानने का प्रयास करें कि भारत के भारत होने का अर्थ क्या है, आज भारत भारत रहा ही कहाँ है? वह तो आज इण्डिया बन चुका है। पहले यह आर्यावर्त था फिर भारत फिर हिन्दुस्तान और अब इण्डिया बन गया। हिन्दुस्तान तक भी यह भारत स्वदेशी विचारधारा की नींव पर खड़ा था परन्तु अब यहाँ स्वदेशी कुछ भी दिखाई नहीं देता। इस देश का नाम जब आर्यावर्त था तब यह देश वास्तव में जगद्गुरु था व चक्रवर्ती राष्ट्र भी था। जब

चन्द्रवंशी सम्राट् दुष्यन्त पुत्र भरत का इस देश में शासन था तब भी यह भारत जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र था। इसी महान् राजा के नाम से इस देश का नाम भारत है, ऐसा सर्वविदित है। महाभारत काल तक भी भारत के पास यह पद विद्यमान था। आज हम जिन नालंदा व तक्षशिला विश्वविद्यालयों की बात करते हैं, ये सभी महाभारत काल से बहुत काल पश्चात् के हैं। इस कारण उस समय की विद्या इस देश के आदिकाल से लेकर महाभारत काल की विद्या की अपेक्षा अति न्यून थी। यद्यपि इस मध्यकाल में आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, नागार्जुन एवं ब्रह्मगुप्त जैसे अनेक वैज्ञानिक व गणितज्ञ हुए जो अपने समय के विश्वविख्यात् व्यक्ति थे। इस काल के संस्कृत भाषा के कवि व साहित्यकारों का मेरी दृष्टि में कोई महत्व इस कारण नहीं है क्योंकि ये सभी भले ही भाषा व व्याकरण के विद्वान् थे परन्तु सभी ने शृंगार रस में डूबकर भारत व मानवजाति को अश्लीलता की कीचड़ में ही धकेला है। गाली संस्कृत भाषा में दी जाये अथवा हिन्दी वा अंग्रेजी में परन्तु है तो अपराध ही। इन साहित्यकारों के हृदय में वेद व ऋषियों के सदाचार व ब्रह्मचर्य की शिक्षा नहीं होने से हर सदाचारी को इन्हें हेय दृष्टि से ही देखना चाहिए। दुर्भाग्य से आज संस्कृत साहित्य के नाम पर यही अपराध

किया जा रहा है, जिससे संस्कृत भाषा का स्थान देववाणी के रूप में रहा ही नहीं है। इस कारण मेरा मत यह है कि जब तक भारत रामायण व महाभारतकालीन आर्य ऋषियों, देवों के महान् विज्ञान व तकनीक का विकास नहीं करेगा, उसे खोज नहीं सकेगा, तब तक हम भारत को जगद्गुरु बनाने का स्वप्न भी नहीं देख सकते। उस समय आयुर्वेद का जो उत्कर्ष था, वह आज की अत्यन्त विकसित ऐलोपैथी चिकित्सा पद्धति में भी नहीं है। युद्धरत योद्धाओं के घाव तत्काल भरने, त्वचा का रंग रूप तत्काल ही पूर्ववत् करने की पद्धति आज कदाचित् विकसित नहीं है। श्रीराम व लक्ष्मण को नागपाश से

मुक्त करने हेतु महान् आयुर्वेदाचार्य गरुड़ ने केवल हाथ के स्पर्श से न केवल उन्हें मूर्छा से मुक्त किया अपितु उनके घाव भरकर त्वचा को भी पूर्ववत् तत्काल ही कर दिया था। आज रैकी चिकित्सा पद्धति अवश्य है परन्तु इतनी त्वरित गति से चिकित्सा करना उसका सामर्थ्य नहीं है। उस समय योद्धाओं के चिकित्सालय में महीनों भर्ती रहने का कहीं वर्णन नहीं है। रावण के पुष्पक विमान की यह विशेषता कि विधवा के बैठने पर विमान उड़ ही नहीं पाता था, यह कौन सी तकनीक थी?वायव्य अस्त्र, आग्नेय अस्त्र, पर्जन्य अस्त्र, मोहिनी अस्त्र, वैष्णवास्त्र, आसुर अस्त्र, माहेश्वर अस्त्र, ऐन्द्रास्त्र, पाशुपत अस्त्र, ब्रह्मास्त्र, सुदर्शन चक्र, वज्र आदि अस्त्र न केवल महाशक्तिशाली थे अपितु इनमें से कुछ प्रयोक्ता के विचारों का अनुसरण करते हुए सीमित वा व्यापक लक्ष्य निर्धारित करने की दैवी तकनीक से सम्पन्न भी थे। यह तकनीक आज नहीं है कि अणुअस्त्र को इस विचार से छोड़ा जाये कि वह एक लक्षित व्यक्ति का ही विध्वंस करेगा, अन्य को कोई हानि नहीं पहुँचायेगा। महात्मा नारायण का नारायणास्त्र जिसका प्रयोग अश्वत्थामा ने पाण्डवों पर किया था, वह निरस्त्र होकर शान्त खड़े रहने पर कोई क्षति नहीं पहुँचाता था और उसका सामना करने पर उग्रतर होता जाता था तथा प्रत्येक प्रयोक्ता के द्वारा पुनः प्रयुक्त नहीं किया जा सकता था, यह आर्यों की तकनीक अब किस देश के पास है?देवों, गन्धर्वों, असुरों की विमान विद्या की समता आज कौन सा देश कर सकता है? उस समय प्रत्येक अस्त्र का प्रतिरोधक अस्त्र होता था। आज वह किस

देश के पास है? पिछले कुछ वर्ष पूर्व जयपुर के ऑयल डिपो में आग लगी और भारत के पेट्रोलियम मंत्री ने असहाय होकर कहा था कि हम आग के स्वतः शान्त होने की प्रतीक्षा ही कर सकते हैं। आज देश के पास आर्यों का पर्जन्य अस्त्र होता तो तत्काल वृष्टि कराके आग को रोक सकता था। जापान के पास एण्टी एटम बम होता तो वहाँ महाविनाश नहीं होता। आर्यों के अस्त्र शत्रु को मारकर वापिस भी आ सकते थे। प्रक्षेपण के पश्चात् योद्धा यदि चाहता तो वापिस भी लौटा सकता था, आज यह तकनीक किस देश के पास है? हम रामायण व महाभारत में कहीं यह भी नहीं पढ़ते कि इन विशाल युद्धों के पश्चात् पर्यावरण का प्रदूषण होकर कोई महामारी वा प्राकृतिक प्रकोप फैला हो। कौन सी टैक्नोलोजी थी कि महाविध्वंसकारी अस्त्रों के प्रयोग से लाखों जान जाने पर भी पर्यावरण पर कोई प्रभाव नहीं होता था। आकाश गमन करना, रूप बदलना, अदृश्य होना, लघु व विशाल रूप धारण करना, आदि जैसी सिद्धियों का होना कुछ समाजों में विशेषकर देवों, गन्धर्वों, असुरों, वानरों में साधारण बात थी। महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों व उनके महर्षि व्यास भाष्य से इनका वैज्ञानिक आधार परिलक्षित होता है, कोई इन्हें गम्भीरता से पढ़ने का यत्न तो करे। आज योग का यथार्थ स्वरूप कहीं लेशमात्र भी दिखायी नहीं देता। उस समय अध्यात्म व पदार्थ विज्ञान दोनों ही उत्कर्ष पर थे, तब यह देश जगद्गुरु भी था और चक्रवर्ती सम्राट भी।

क्रमशः .....

- वेद विज्ञान मन्दिर
भागल भीम, भीनमाल
चलभाष- ०९४१४१८२१७३

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४०₹

प्राप्ति स्थल

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

।। ओ३म् ।।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर

के तत्त्वावधान में

१७ वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

इस अवसर पर

अखिल भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद्

का वार्षिक सम्मेलन

वयोवृद्ध भजनोपदेशक सम्मान समारोह

दिनांक ११-१२ अक्टूबर २०१४

जिन विद्वानों व आर्य भजनोपदेशकों की स्वीकृति प्राप्त हुई है वे हैं- आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. सोमदेव शास्त्री, श्री मामचन्द पथिक, श्री कैलाश कर्मठ, श्री बृजपाल कर्मठ (मेरठ), श्री सत्यपाल मधुर, श्री नरेश दत्त, श्री राजेश प्रेमी (जालन्धर), श्री योगेश आर्य (मुम्बई), श्री विजयानन्द (फिरोजपुर), श्री राकेश आर्य (बिजनौर), श्री जगत वर्मा (पंजाब), मा. किशन लाल (हरियाणा), श्री नरेश निर्मल (मुजफ्फरनगर), श्री राजवीर आर्य, श्री सियाराम निर्भय, श्री महाशय रणवीर सिंह बेधड़क (मुजफ्फरनगर), श्री गजराज सिंह (मेरठ), श्री राम गोपाल आर्य (मथुरा), श्री निरंजन सिंह आर्यवीर (गाजियाबाद), श्री श्रीपाल जी (बागपत), श्री वेदपाल (सिनौली बागपत), श्री राजबीर सिंह आर्य (सहारनपुर), श्री तृषपाल आर्य (सिनौली बागपत), श्री घासीराम आर्य (बिजनौर), श्रीमती सुदेश आर्या (दिल्ली), श्री नारायण सिंह (दिल्ली), श्री यशदेव हितैषी, श्री युगल किशोर, पं. योगेश दत्त, श्री विक्रम देव आर्य आदि।

मान्यवर, आपको विदित ही है कि आर्यजनों द्वारा पुण्य स्थली नवलखा महल, उदयपुर, जहाँ महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छः मास विराजकर, लोक कल्याणार्थ सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थरत्न का प्रणयन सम्पूर्ण किया था, जैसे पवित्र ऐतिहासिक स्थल को उस महामना की स्मृति में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक का स्वरूप प्रदान करने का निश्चय किया था, जहाँ से महर्षि दयानन्द की दिव्य विचारधारा का विश्व भर में प्रचार-प्रसार किया जावे।

प्रभु कृपा से व आप सभी के सहयोग से, **यह सत्यार्थ प्रकाश भवन आज दर्शनीय व प्रेरक स्थल के रूप में ख्याति प्राप्त है।** प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में आने वाले दर्शनार्थीगण, यहाँ से वैदिक विचारधारा का परिचय प्राप्त कर, प्रेरणा ले रहें हैं।

इसी क्रम में इस प्रेरणा स्थल पर प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन करने का निश्चय किया गया था ताकि इस ऐतिहासिक अवसर पर हम आर्यजन, एक ऐसे स्थल पर, जहाँ कभी ऋषिवर के चरण पड़े थे; उनकी वाणी ने लागों के दिलों के तारों को झंकृत किया था, एकत्रित हो, करुणा वरुणामय देव दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकें तथा विद्वानों के चरणों में बैठ, ऋषि मिशन के अग्र-प्रसारण का संकल्प ले सकें।

आयें, हम जीवन-व्रत लें, मानस बनावें, सहयोग प्रारम्भ करें, ताकि माँ वसुन्धरा की गोद को गौरवान्वित करने वाले, सम्पूर्ण मानवता के हितैषी, उस विषयायी देवता की स्मृति में इस केन्द्र को इतना दर्शनीय और सशक्त बनावें कि एक बार पुनः यहाँ से विश्व वैदिक संस्कृति का पाठ पढ़ सके।

११ एवं १२ अक्टूबर, २०१४ में आयोज्य महोत्सव में अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें।

निवेदक

महाशय धर्मपाल अध्यक्ष	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती न्यासी	अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष	डॉ. अमृतलाल तापड़िया संयुक्त मंत्री एवं संयोजक	भवानीदास आर्य मंत्री
विजय शर्मा उपाध्यक्ष	नारायण मित्तल कोषाध्यक्ष	श्रीमती शारदा गुप्ता महिला संयोजिका	एवं समस्त न्यास परिवार	

'आर्यावर्त्त'
विश्व प्रसिद्ध चित्रदीर्घा
एवं
सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ
(काँच द्वारा निर्मित व घूमता हुआ)

चित्रदीर्घा के आकर्षण

१. वेद वीथि
२. भारत की ऋषि परम्परा
३. श्री राम चरितम्
४. श्री कृष्ण चरितम्
५. मेवाड़ दर्शन
६. आर्य समाज के चमकते सितारे
७. भारत के महान् सपूत
८. सत्यार्थ प्रकाश रचना कक्ष
(काँच का स्वचालित स्तम्भ)
९. आर्य समाज की विभूतियाँ
१०. सत्यार्थ प्रकाश चित्रमाला
११. महर्षिवर देव दयानन्द जीवन-गाथा

प्रिय आर्य भाई/बहिनो,

आपको प्रसन्नता होगी की ऋषिवर देव दयानन्द की तपःस्थली, यह नवलखा महल अब सौन्दर्यीकरण के अनेक चरणों से गुजरकर नयनाभिराम स्मारक बन चुका है। नवनिर्मित 'आर्यावर्त्त' नाम्नी चित्रदीर्घा व काँच का घूमता हुआ सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ, सैकड़ों पर्यटकों को रोजाना आकर्षित व प्रेरित कर रहा है। विश्वभर में ऐसी चित्रदीर्घा नहीं है। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस बार आप अवश्य पधारें। आपको नवलखा महल को नई सजधज में देख निश्चित प्रसन्नता होगी। यह हमारा विश्वास है।

कृपया ध्यान दें-

१. उदयपुर रमणीक स्थल है। अतएव यह सत्संग लाभ के अतिरिक्त पर्यटन लाभ का भी अभूतपूर्व अवसर है।
२. अक्टूबर में रात्रि में हलकी सर्दी हो सकती है अतः कृपया गर्म वस्त्र व बिस्तर साथ लावें।
३. **अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजें।** ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके।
४. जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट आवास व्यवस्था चाहते हों वे हमें शीघ्र लिखें ताकि होटलों में उनका आरक्षण कराया जा सके। **यह व्यवस्था सशुल्क होगी।**
५. श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है। अपना छोटा-बड़ा अर्थ-सहयोग अवश्य दें।

चैक या ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के नाम से ही भेजें।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ५ एवं ६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ५** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- भावना चौहान (विजयनगर), शुभम् कुमार (मुजफ्फरपुर), शीतल सोनी (बीकानेर), नविता (बीकानेर), किरण राठौड़ (बीकानेर), अनिता चौहान (बीकानेर), रविन्द्र कौर (बीकानेर), श्रीमती स्वाति मोदी (बीकानेर), भुवनेश यादव (बीकानेर), श्रीमती देवी खत्री(बीकानेर) एवं **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ६** के चयनित १० विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- डॉ. धर्मवीर कुण्डू, टिटौली (रोहतक), श्री कन्हैया लाल साहू (डोहरिया), बीना आर्य (विजयनगर), श्री इन्द्रजित् देव (यमुनानगर), सरोज मदान (करनाल), योगेश सोनी (बीकानेर), सुमन (बीकानेर), किरण गोदारा, उदयसागर (बीकानेर), कंचन देवड़ा (बीकानेर), बजरंग लाल वर्मा (बीकानेर)। इनको स्वयं को अथवा इनके द्वारा नामित भाई/बहिन को १ वर्ष तक सत्यार्थ सौरभ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी।

डॉ. मोतीलाल शर्मा सम्मानित

१५ अगस्त २०१४ को जिला प्रशासन चुरु द्वारा डॉ. मोतीलाल शर्मा जयपुर को उनकी सेवाओं के लिए प्रतिष्ठित 'भामाशाह पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राज्य के चिकित्सा मन्त्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ के अतिरिक्त जिला प्रशासन के जिम्मेदार अधिकारी भी उपस्थित थें। डॉ. मोतीलाल शर्मा को न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

हिन्दी दिवस पर विशेष

महर्षि दयानन्द का हिन्दी को योगदान

उन्नीसवीं शाताब्दी में नये तथा अभ्युदयशील भारत के निर्माण में जिन महान् विभूतियों तथा संस्थाओं के हाथ लगे- उनमें महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा उनके आर्य समाज की संस्थिति सर्वथा सुस्पष्ट, अग्रणी, सर्वमान्य तथा बहुश्रुत है। स्वामी दयानन्द सरस्वती का चरित्र इतना महान्, बहुमुखी तथा व्यापक रहा कि उनसे हिन्दी के अनेक साहित्यकारों ने प्रेरणा लेकर अपनी कृतियों का निर्माण किया। इनमें विज्ञान मार्तण्ड वात्सायन कृत 'बोधरात्रि' की चर्चा तथा गणना हिन्दी के महाकाव्यों पर लिखित शोध प्रबन्धों में भी की गयी है। यह स्वामी जी की जीवनगाथा पर आधारित गयारह सर्गों का प्रबन्ध काव्य है। इसमें परम्परागत शास्त्रीय बाह्य लक्षणों तथा नायक एवं कथानक विषयक महत्ता आदि से सम्बद्ध कतिपय अनिवार्य शाश्वत लक्षणों का सम्यक्रूपेण निर्वाह मिलता है।

स्वामीजी ने हिन्दी साहित्य को न केवल प्रभावित ही किया अपितु उसे एक नयी दिशा भी दी है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के पिता और युग प्रवर्तक भारतेन्दु बाबू हरिशचन्द्र के समकालीन थे। भारतेन्दु उनके विज्ञापनों को अपनी पत्रिकाओं में ससम्मान स्थान देते थे। स्वामीजी द्वारा लिखित 'आत्मकथा' अपने समय की खड़ी बोली के मानक स्वरूप तथा गद्य लेखन का प्रादर्श है। उनके 'सत्यार्थ प्रकाश' को भी आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य के प्रस्थानिक बिन्दु के रूप में ग्रहण किया जा सकता है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' के आधुनिक काल के द्वितीय प्रकरण में गद्य साहित्य के आविर्भाव में हिन्दी गद्य-प्रसार में आर्यसमाज के योग को विशेष रूप से रेखांकित करते हुए लिखा कि- 'शिक्षा के आन्दोलन के साथ ही साथ ईसाई मत का प्रचार रोकने के लिए मतमतान्तर सम्बन्धी आन्दोलन देश के पश्चिमी भागों में चल पड़े।' पैगम्बरी एकेश्वरवाद की ओर नवशिक्षित लोगों को खिंचते देख स्वामी दयानन्द सरस्वती वैदिक एकेश्वरवाद लेकर खड़े हुए और सम्वत् १९२० से उन्होंने अनेक नगरों में घूम-घूमकर व्याख्यान देना आरम्भ किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि ये व्याख्यान देश में बहुत दूर तक प्रचलित साधु हिन्दी भाषा में ही होते थे। स्वामीजी ने अपना 'सत्यार्थ प्रकाश' तो हिन्दी या आर्य भाषा में प्रकाशित ही किया, वेदों के भाष्य भी संस्कृत और हिन्दी दोनों में किए। स्वामीजी के अनुयायी हिन्दी को 'आर्य भाषा' कहते थे। स्वामीजी ने सम्वत् १९२२ में 'आर्य समाज' की स्थापना की और सब आर्य समाजियों के लिए हिन्दी या आर्यभाषा को पढ़ना आवश्यक ठहराया। संयुक्त प्रान्त के पश्चिमी जिलों और पंजाब में आर्य समाज के प्रभाव से हिन्दी गद्य का प्रचार बड़ी तेजी से हुआ। पंजाबी बोली में लिखित साहित्य न होने से और मुसलमानों के बहुत अधिक सम्पर्क से पंजाब वालों की लिखने-पढ़ने की भाषा उर्दू ही रही थी। आज जो पंजाब में हिन्दी की पूरी चर्चा सुनाई देती है, इन्ही की बदौलत है।

स्वामीजी के पत्रों के द्वारा ही हिन्दी में पत्र-साहित्य विद्या का श्रीगणेश हुआ। महर्षि दयानन्द के पत्रों का अत्यन्त महत्व है क्योंकि उनसे तत्कालीन युग का स्वच्छ मुकर ही नहीं मिलता है प्रत्युत हिन्दी गद्य लेखन की एक छवि तथा बिम्ब भी सफलतापूर्वक उभरता है।

डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में ब्रिटिश काल (सन् १८०० से १९४७) के अन्तर्गत आर्य समाज के विषय में लिखा है कि ब्राह्मसमाज के आविर्भाव के बाद भारत में हिन्दू धर्म का पुनरुद्धार करने के लिए नये-नये प्रयत्न होने लगे। अनेक व्यक्तियों ने घर-बार छोड़कर उसके हित जीवन का ही उत्सर्ग कर दिया। इस काल के ऐसे महान् व्यक्तियों में, जिनका नाम हिन्दी भाषा और साहित्य से घनिष्ठ सम्बन्ध है, स्वामी दयानन्द (१८२४ से १८८३) का नाम बड़े गौरव और आदर के साथ लिया जा सकता है। १८७५ में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। थोड़े ही समय में समस्त उत्तरी भारत में उसका प्रचार हो गया और स्थान-स्थान पर उसकी शाखाएँ भी खुल गई। भारतवासियों ने

बहुत बड़ी संख्या में इस मत को अपनाया जिससे अधिकतर सुधारवादी सनातनधर्मियों के हाथ में बागडोर होते हुए भी हिन्दी साहित्य की गतिविधि प्रभावित हुए बिना न रह सकी। आर्य समाज ने बहुत से हिन्दुओं को मुसलमान और ईसाई होने से बचा लिया। सामाजिक क्षेत्र में समाजियों ने सबसे बड़ा काम किया। विधवा-विवाह-निषेध, बाल-विवाह तथा ब्राह्मण-धर्मान्तर्गत कर्मकाण्ड और अंध विश्वासों का विरोध कर उन्होंने विशुद्ध वैदिक धर्म के प्रचार की आवाज बुलन्द की। उन्होंने प्राचीन ढंग से शिक्षा देने के लिए गुरुकुल और नवीन शिक्षा के प्रचारार्थ दयानन्द ऐंग्लो-वर्नाक्यूलर शिक्षण संस्थाएँ स्थापित कीं। इससे एक समन्वयात्मक दृष्टिकोण का जन्म अवश्यम्भावी था। स्थान-स्थान पर गौ-रक्षिणी सभाएँ स्थापित करना भी उनका ध्येय रहा।

डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने अपने उक्त इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी के कुछ प्रमुख शैलीकारों में राजा लक्ष्मण सिंह, राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिन्द', भारतेन्दु हरिशचन्द्र, लाला श्री निवासदास, बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, राधाकृष्ण दास और 'प्रेमधन' के मध्य स्वामी दयानन्द सरस्वती को भी स्थान प्रदान किया। उन्होंने दयानन्द के विषय में लिखा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती अहिन्दी भाषी और आर्य समाज के प्रवर्तक थे। स्वभावतः उनका झुकाव संस्कृत की ओर रहना आवश्यक था। तब भी उन्होंने सरल भाषा का प्रयोग ही किया है। उनकी भाषा में कहीं-कहीं ब्रज भाषापन भी मिल जाता है। उन्होंने अनेक शब्दों का प्रयोग संस्कृत, लिंग और धातुओं के अनुसार किया है। संस्कृत तत्व अधिक रहने से उनकी भाषा की गति मंद हो गई है। आर्य-समाज के प्रवर्तक होने के कारण उन्होंने हिन्दी गद्य को खण्डन-मण्डन एवं कर्म-पूर्ण शैली प्रदान की। उसमें ओज, विशदता और विरोधी पक्ष को प्रभावित करने की शक्ति है। साथ ही उनकी शैली में वक्तृता के गुण भी मिलते हैं। शास्त्रार्थों के उपयुक्त व्यंग्य और हास्य उनकी शैली के प्रधान अंग है। हिन्दी गद्य प्रवाह और शैली निर्माण की दृष्टि से स्वामी जी चिर-स्मरणीय रहेंगे।

हिन्दी साहित्य में आर्य-समाज को सर्वाधिक अभिव्यक्ति द्विवेदी युग में मिली। यदि द्विवेदी युग को 'आर्य समाज युग' भी कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। इस युग के हिन्दी साहित्य में जो इतिवृत्तात्मकता, स्थूलता, उपदेशात्मकता, पवित्रता, नैतिकता तथा सदाचरण की बातें आयी हैं वे प्रायः आर्य समाज की ही देन है। द्विवेदी युग के प्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है: मेरे हृदय में श्री स्वामी दयानन्द पर अगाध श्रद्धा है। वह बहुत बड़े समाज संस्कर्त्ता, वेदों के बहुत बड़े ज्ञाता तथा समयानुकूल भाष्यकर्त्ता और आर्य संस्कृति के बहुत बड़े पुरस्कर्ता थे। उन्होंने जिस समाज की स्थापना की उससे भी देश, अपने धर्म और अपनी भाषा को बहुत लाभ पहुँच रहा है। मैं स्वामी जी विद्वता और उनके कार्य-कलापों को अभागे भारत में सौभाग्य सूचक चिह्न समझता हूँ।

द्विवेदी युग के शीर्षस्थ कवि और खड़ी बोली में आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' लिखने वाले महाकवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने 'दयानन्द-गौरव-गान' लिखा-

वैदिकता विधि-पूत, वेदिका वंदनीय बलि।
वेद-विकच-अरविन्द मंत्र-मकरंद मत्त अलि।।
आर्य भाव कमनीय रत्न के अनुपम आकर।
विविध-अंधविश्वास तिमिर के विदित प्रभाकर।।
नाना विराध वारिद पवन कदाचार कानन दहन।
है निरानन्द-तरु-वृन्द के दयानन्द-आनन्द घन।।
वैदिक धर्म न है प्रदीप जो दीप्ति गंवावे।
तर्क-वितर्क विवाद वायु वह जिसे बुझावे।।
मलिन विचार कलंक कलंकित है न कलाधर।
प्रभाहीन कर सके जिसे उपवर्म विभाकर।।
वह है वैदिक-दुर्लभ-दिव्य मणि, दुरित तिमिर है खो रहा।
उसके द्वारा भू-वलय है विपुल विभूषित हो रहा।।
पंचभूत से अधिक भूतियुत है विभुसखा।।
प्रभु प्रभाव से है प्रभावमय पत्ता-पत्ता।।
है त्रिलोक में कला अलौकिक कला दिखाती।
सकल ज्ञान-विज्ञान-विभव है भव की थाती।।
उन पर समान संसार के मानव का अधिकार है।
इस धर्म-नियामक वेद का यह महनीय विचार है।।

क्रमशः .....

– डॉ. लक्ष्मी नारायण दुबे

व्यंग

तुम्हें लानत है, हमें लानत है

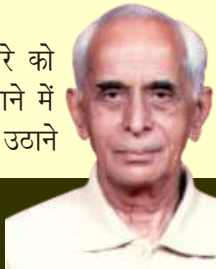

डा. पूर्ण सिंह डबास

तुमने कभी कुछ अच्छे काम भी किए थे इसलिए तुम पर भरोसा हो गया था। इसी भरोसे के कारण हमने अपनी नैया की पतवार तुम्हारे हाथों में सौंप दी थी। लेकिन आधी सदी से ज्यादा हो गया तुम उसे वहीं हिचकोले खिला रहे हो। इतना ही नहीं, उसे भँवर की तरफ ले जा रहे हो।

तुम्हें कुर्सी नाम की चीज क्या मिल गई कि तुम उसी के चारों तरफ मंडराते रहे। तुम्हारा एक मात्र लक्ष्य कुर्सी ही रह गया। 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव....' की जो वैदिक ऋचा किसी मंत्रद्रष्टा ऋषि ने ईश्वर के लिए कही थी वह तुमने कुर्सी पर लागू कर दी और तुम्हारा माई-बाप तथा भगवान सब कुर्सी ही बन गई। कुर्सी से आगे भी कुछ होता है वह तुम्हें कभी दिखाई ही नहीं दिया। कुर्सी पर निशाना साधने में तुम गुरु द्रोण के शिष्य अर्जुन को भी मात दे गये। तुम बीमार थे, हस्पताल में थे, जेल में थे, उम्र के किसी भी मोड़ पर थे, पक्ष में या विपक्ष में थे, ध्यान तुम्हारा कुर्सी पर ही था। तुम्हें पार्टी से निकाला गया या असंतुष्ट बन कर तुम खुद उस से निकल गये, अपमान झेला, प्रताड़ना सही, लेकिन कुर्सी की आस दिखते ही दुम हिलाते हुए वापस वहीं पहुँच गये। विरोधियों ने तुम्हें जेल तक की हवा खिला दी लेकिन कुर्सी के लालच में तुम उनके चरणों में भी जा गिरे। तुमने कुर्सी के लिये अपने से आधी उम्र वालों के पैर छुये, उन्हें माई-बाप कहा तथा अपना और देश का उद्धारक बताया। तुम्हारी ये चेष्टाएँ देखकर, देखने वालों के सिर शर्म से झुक गये लेकिन बेशर्मों तुमने यह नहीं सोचा कि तुम से आधी उम्र वाले वे छोकरे अगर तुम्हारे माई बाप हैं तो तुम इतनी लंबी जिंदगी का बोझ किस लिए ढोते हो! अगर किसी नौसिखिए को गुरु मानकर उसी के चरणों में सिर रखना था तो दुष्टो! अगुआई करने वालों की सूची में नाम किस बूते पर दर्ज करा रखा था।

तुम्हारा कभी न भरने वाला और सदा भूखा रहने वाला पेट देश की समृद्धि को खा गया। तुम यहाँ का हर द्रव्य खा गए, चाहे वह धरती के ऊपर था या भीतर था। राष्ट्र की जरूरत के लिए विदेश से मँगवाए गए पदार्थों तक को तुमने नहीं बख्शा और उन्हें भी निगल गये। बाढ़-पीड़ितों का राशन तुम खा गये, भूकम्प पीड़ितों की राहत सामग्री तुम हड़प गए, शहीदों के कफन तुम बेच गये, अकाल पीड़ितों की रोटी तुमने नहीं छोड़ी, और तो और पशुओं का चारा तक तुम पचा गए। तुम्हारे जीवन का परम लक्ष्य सिर्फ खाना रह गया, चरना रह गया। सब कुछ हड़प कर जाने की इस प्रक्रिया में पथ्य-अपथ्य का भी ध्यान तुम्हें नहीं रहा। जंगल के पेड़ तुम खा गए, सीमेंट तुम खा गए, लोहा तुम खा गए और यूरिया तुम खा गए।

तुम्हारा पूरा जीवन एक दूसरे को गिराने के लिए दाँव-पेच लगाने में ही बीता लेकिन देश को ऊपर उठाने का दाँव तुमने कभी नहीं लगाया। या तो तुम वह दाँव जानते ही नहीं थे या एक दूसरे को पटकने और जनता का माल हजम करने के चक्कर में उसे लगाने की तरफ तुम्हारा ध्यान ही नहीं गया।

दुष्टवरो! तुम्हें लानत है कि तुम ऊँच-नीच और जात-पाँत के नाम पर हमें बाँटते रहे और हमें लानत है कि हम बँटते रहे। तुम्हें लानत है कि तुम गरीबी दूर करने का मोहक नारा लगाकर ऐश कूटते रहे और हमें लानत है कि हम निरीह बनकर देखते रहे। हमें लानत है कि हम तुम पर बार-बार भरोसा करते रहे और तुम्हें लानत है कि इस भरोसे की आड़ में तुम हमारा गला काटते रहे। तुम्हें लानत है कि जब देश पर खतरा मंडराया तब तुमने आवाज तो शेर की निकाली लेकिन भूमिका गीदड़ की निभाई। हमें लानत है कि हम तुम्हारी शेर की एक्टिंग पर मुग्ध हो गए और तुम्हारी गीदड़ की भूमिका को अनदेखा कर दिया। तुम्हें लानत है कि तुमने अपने चारों तरफ पहरा लगवाकर अपनी सुरक्षा तो पक्की कर ली और जनता को घुसपैठियों और आतंकियों के

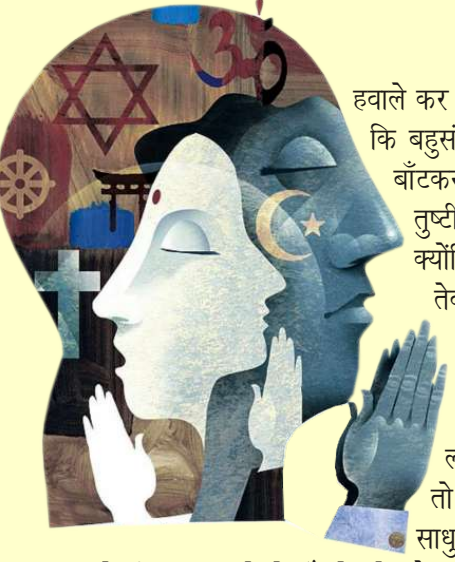

हवाले कर दिया। तुम्हें लानत है कि बहुसंख्यकों को टुकड़ों में बाँटकर अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण करते रहे क्योंकि उनके विरोधी तेवर देखकर तुम्हें अपनी धोती बिगड़ जाने का डर लगा रहता था। तुम्हें लानत है कि तुम पाँव तो बाबाओं और साधुओं के छूते रहे और दोस्ती अपराधियों से गाँठते रहे और हमें लानत है कि हम भेड़ों की खाल में छिपे भेड़ियों का शिकार नहीं कर सके। तुम्हें लानत है कि तुम सच की सौगंध खाकर झूठ का कारोबार करते रहे और हमें लानत है कि हम तुम्हारी इन करतूतों को झेलते रहे और सक्रिय विरोध करने में असमर्थ रहे।

तुम्हारे महंगे सूट सिलते रहे और गरीब की लंगोटी निरंतर छोटी होती चली गई। तुम्हें सरकारी कोश से जन हित के लिए पैसा मिलता रहा और तुम उससे गुलछर्रे उड़ाते रहे। तुम्हारे बंगले बनते रहे और गरीब की छत गायब होती रही। तुम पाँचतारा होटलों में चरते रहे और निर्धन की रसोई के अन्न कण और बर्तन-भांडे खिसकते रहे। क्या-क्या लिखूँ तुम्हारे बारे में? अंत में यही कहते हुए बात खत्म करता हूँ- तुम्हें लानत है, तुम्हें धिक्कार है। अगर तुम किसी बड़े समुद्री जहाज में बैठकर बीच सागर में डूबने की कृपा कर सको तो यह गरीब जनता उस जहाज का खर्चा और नुकसान खुशी से झेलने को तैयार हो जाएगी।

-एम-९३ साकेत, नई दिल्ली

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

देने में है प्रसन्नता

कथा सरित

एक बार एक विद्वान् उपदेशक एक सभा में प्रवचन कर रहे थे। सभा में १०० के लगभग श्रोता उपस्थित थे। उस समय वे प्रसन्नता पर बोल रहे थे, तभी अचानक उपदेशक चुप हो गये और सभी को एक-एक गुब्बारा देते हुए बोले, ''आप सभी गुब्बारे पर अपना नाम लिख दें।'' जब सभी ने अपने नाम लिख दिये तो उपदेशक ने सभी गुब्बारे इकट्ठे किये और पास के एक कक्ष में छोड़ आए। इसके बाद उन्होंने सभी श्रोताओं से पाँच मिनट में अपना नाम लिखा गुब्बारा उठाकर लाने को कहा। देखते ही देखते कक्ष में छीना-झपटी, अफरा-तफरी का माहौल बन गया। सभी के चेहरों पर कठोरता दिखाई दे रही थी। पाँच मिनट बीत गये लेकिन कोई भी अपना गुब्बारा नहीं ढूंढ पाया। अब उपदेशक ने धैर्य और शांति पूर्वक जिस व्यक्ति, जिसके नाम का गुब्बारा मिले उसे देने को कहा। एक मिनट के अन्दर हर के हाथ में उसका गुब्बारा था। विद्वान् उपदेशक ने कहा, ''बिलकुल, ऐसा ही हमारे जीवन में होता है। हर कोई प्रसन्नता की तलाश में इधर से उधर बेचैनी से घूम रहा है जबकि यह नहीं जानता कि प्रसन्नता मिलेगी कहाँ? प्रसन्नता दूसरों से छीना-झपटी करने से नहीं, दूसरों को देने में छिपी रहती है। दूसरे को प्रसन्नता देकर तो देखिए, आपको खुद को प्रसन्नता मिल जायेगी। ढूंढने की आवश्यकता ही नहीं होगी। यही तो हमारे जीवन का उद्देश्य है। वहाँ आए श्रोताओं के चेहरों पर प्रसन्नता झलक रही थी।

-अर्जुनदेव चड्ढा
४-प-२८, विज्ञाननगर, कोटा

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

यीशु ने लोगों के कोढ़ वा अधरंग रोग को स्पर्श मात्र से ठीक कर दिया।

ये सब बातें भोले मनुष्यों के फसाने की हैं। ये विद्या व सृष्टिक्रम विरुद्ध होने से सत्य नहीं हो सकती। वास्तविकता है- कि औषध व शल्य क्रिया द्वारा ही बीमारियों को ठीक किया जा सकता है।

इस हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश एक बार अवश्य पढ़ें।

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

वेद विवेचना

वैदिक वाङ्मय में 'वेद' शब्द दो प्रकार का मिलता है। एक आद्युदान्त और दूसरा अन्तोदान्त। इनमें से प्रथम जो आद्युदान्त है, वह ज्ञान का पर्याय है। यह 'विद् ज्ञाने' धातु से निसम्पन्न है।

आचार्य पाणिनि ने इसे वृषादि गण में पढ़ा है। दूसरा वेद शब्द जो कि अन्तोदान्त है, वह दर्भमुष्टि से निर्मित एक यज्ञीय उपकरण का पारिभाषित नाम है। आद्युदान्त 'वेद' शब्द ऋक्, यजु, साम और अथर्व संज्ञक मन्त्र संहिताओं के साथ संयुक्त होकर मंत्र संहिता मात्र के लिये लोक में विख्यात है। केवल 'वेद' कहने मात्र से इन्हीं का बोध होता है। तात्पर्य यह है कि मन्त्र संहिताओं की ही वेद संज्ञा है।

कालान्तर में यही वेद शब्द अनेक ज्ञान के आधारभूत ग्रन्थों के साथ जुड़कर आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, अर्थवेद, नाट्यवेद इत्यादि के रूप में दृष्टिगोचर होता है। परन्तु उक्त सभी ग्रन्थों का मूल वेद संहितायें ही प्रसिद्ध हैं अतः इन्हें उपवेद कहा जाता है और इनकी प्रमाणिकता वेदों के ही ऊपर आधारित है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ये चार मंत्र संहिताएँ ही मूल वेद हैं, यह मान्यता सर्वसम्मत रही है। सृष्टि के आदि से ही सभी ऋषि महर्षि व विद्वान् उक्त मंत्र राशि को अपौरुषेय, नित्य और स्वतः प्रमाण मानते और कहते आए हैं। परन्तु इस 'अपौरुषेय शब्द को लेकर मतभेद होने से वैदिकों में दो पक्ष हो गए। एक पक्ष का मत है कि वेद का कर्त्ता कोई भी नहीं है, वे अनादि और नित्य हैं। इस पक्ष के लोग ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता नहीं मानते, जगत् को अनादि अनन्त मानते हैं, सृष्टि व प्रलय को भी नहीं मानते। दूसरे पक्ष के मत में ईश्वर सृष्टि-प्रलय का कर्त्ता और मंत्र संहिता रूप वेदों का प्रकाशक है। प्रत्येक सृष्टि की आदि में वह मनुष्यों को वेदों का ज्ञान देता है। ईश्वर नित्य है अतः उसका ज्ञान वेद भी नित्य है, इसलिए वेद स्वतः प्रमाण हैं। जगत् में उत्पन्न शरीरधारी कोई पुरुष वेदों का कर्त्ता नहीं है, इसलिये वेद अपौरुषेय कहलाते हैं इत्यादि। परन्तु दोनों ही पक्ष इस बात में एक मत हैं कि मंत्र राशि ही वेद हैं, वे अपौरुषेय, नित्य और स्वतः प्रमाण हैं।

ईश्वरवादी वैदिकों के अनुसार सृष्टि की आदि में जो मनुष्य सर्वप्रथम होते हैं वे बिना माता पिता के संयोग के पृथ्वी के गर्भ में से उत्पन्न होते हैं। इसे अमैथुनी सृष्टि कहते हैं। ये मनुष्य शुद्ध, पवित्र, सतोगुण प्रधान, निर्मल बुद्धि, रागद्वेष रहित साक्षात् कृद्धर्मा, समाहितचित्त योगी होते हैं। इन्हीं में से चार मुख्य ऋषियों को परमेश्वर ने मंत्र प्रदर्शित किए। अग्नि ऋषि को ऋक्, वायु ऋषि को यजुः, आदित्य ऋषि को साम और अंगिरा ऋषि को अथर्व मंत्र राशि सुनाई पड़ी जिसे सुनकर उनकी वाणी प्रस्फुटित हुई। उसके पश्चात् उन्होंने अन्य लोगों पर इनका उच्चारण किया, उन्हें सुनाया, जिसे सुनकर वे भी बोलने लगे। मंत्र राशि सुनी जाने के ही कारण श्रुति कहलाई। उक्त ऋषियों ने ध्यान योग से बुद्धि में मंत्र राशि को देखा, इसीलिये वे मंत्रद्रष्टा कहे जाते हैं। ईश्वरवादियों के अनुसार ज्ञान और भाषा दैवी प्रेरणा से ही मनुष्य को प्राप्त होते हैं, मनुष्य के वश की बात नहीं कि वह इन्हें बना सके।

इस उक्त मान्यता पर आक्षेप करने वाला तीसरा पक्ष भी है, जो वेदों को ईश्वर की देन न मानकर ऋषियों की देन मानता है। इसके अनुसार ऋषियों ने ही मंत्र बनाए हैं, भाषा भी उन्होंने ही बनाई और ज्ञान भी उन्होंने ही दिया है, ईश्वर ने नहीं। अतः ऋषि लोग मंत्रद्रष्टा नहीं, मंत्रकर्त्ता हैं। आज भी जो वेद की शाखाएँ हैं, वे किसी न किसी मनुष्य के ही नाम से प्रचलित हैं यथा शाकल, शौनक, तैत्तिर, पैप्पलाद, माध्यन्दिन, कोथुम आदि। इसके साथ ही वेद मंत्रों में अनित्य पदार्थों, पुरुषों, राजाओं और ऋषियों के नाम मिलते हैं यथा-गंगा, यमुना, सुदास, देवापि, शान्तनु, वसिष्ठ, भरद्वाज, जमदग्नि आदि। इसे विदित होता है कि इनके समय में या इनके पश्चात् ही वेदमंत्र बनाए गये अतः वे अपौरुषेय और नित्य नहीं हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती भी ईश्वरवादी वैदिकों में से ही हैं। वे भी वेदों को ईश्वरीय ज्ञान, अपौरुषेय (अमनुष्यकृत) नित्य और स्वतः प्रमाण मानते हैं और मंत्र संहिताओं को ही मूल वेद स्वीकारते हैं अन्य ब्राह्मणों, शाखाओं को नहीं। उनके अनुसार ब्राह्मण, शाखादि सब मनुष्यकृत हैं अतः वे निर्भ्रान्त और स्वतः प्रमाण के योग्य नहीं हो सकते। वे अनित्य हैं और वेदानुकूल होने पर ही उनका प्रमाण माना जाना चाहिए। उनका कहना है कि ऋषि या तो मंत्रद्रष्टा होते हैं, या फिर मन्त्रार्थद्रष्टा। कोई ऋषि मंत्रकर्त्ता नहीं है।

स्वामी दयानन्द की यह मान्यता उनकी स्वकल्पित नहीं है अपितु ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त सभी वैदिकों की यही मान्यता रही है। इस पर होने वाले आक्षेप भी नये नहीं हैं, बहुत प्राचीन हैं। वैदिक विद्वानों ने सभी आक्षेपों के उत्तर दे दिये हैं। अब तक ऐसा एक भी आक्षेप शेष नहीं है जिसका उत्तर वैदिक विद्वानों द्वारा नहीं दिया गया। वैदिक वाङ्मय के अध्ययन से यह सब जाना जा सकता है।

उन्हीं पुराने आक्षेपों, आरोपों और प्रहारों को एकत्र करके वर्तमान में कुछेक लोगों ने पुनः परोसना प्रारम्भ कर दिया है और ऐसा समझते हैं कि हमने बहुत बड़ा अन्वेषण और अनुसन्धान कर डाला है। स्वामी दयानन्द को झूठा सिद्ध करने की धुन में सारी आर्ष परम्परा को ही मिथ्यावादी कहने का दुस्साहस दिखाया है। परन्तु ये स्वयं नालायक अर्थात् अयोग्य हैं।

इनकी नीयत ठीक नहीं है, इनके लेखन से स्पष्ट विदित हो रहा है। वेदों के ऊपर आक्षेप और प्रहार करने का कार्य नया नहीं, अति प्राचीन है। नास्तिक चारवाक्, वाममार्गी, आभाणक, बौद्ध, जैन, विदेशी और स्वदेशी मत-महजब, वेदों पर कार्य करने वाले अनेक विदेशी तथाकथित विद्वान् आदि लोगों ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर वेदों और वैदिक मान्यताओं पर आक्षेप और प्रहार किए हैं। किसी ने उन्हें भाण्ड, धूर्त और निशाचरकृत कहा तो किसी ने गड़रियों के गीत कहा। किसी ने आत्मा को नहीं माना, किसी ने परमात्मा को नहीं माना। कोई लोक को नहीं मानता तो कोई परलोक को नहीं मानता इत्यादि। परन्तु इन सबके उत्तर वैदिक विद्वानों द्वारा तर्क, युक्ति और प्रमाण पुरस्सर दिए जा चुके हैं। वैदिक षड्दर्शनों के अध्ययन से यह सब विदित हो जाता है।

जहाँ तक वेदों की अपौरुषेयता और नित्यता पर आक्षेप का प्रश्न है सो इसे जैमिनि मुनि ने अपने पूर्व मीमांसा ग्रन्थ के प्रथमाध्याय में ही सभी पूर्वपक्षियों का समाधान करते हुए सिद्ध किया है कि शब्द नित्य है, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध नित्य है, वेद भी अपौरुषेय और नित्य हैं। उत्तर मीमांसा अर्थात् वेदान्त दर्शन के प्रारम्भ में ही महर्षि व्यास ने ब्रह्म अर्थात् परमेश्वर को शास्त्र की योनि कहकर वेदों को ईश्वर प्रदत्त अपौरुषेय और नित्य सिद्ध किया है।

स्वामी दयानन्द के इस कथन पर कि 'केवल मंत्र संहिता ही अपौरुषेय, नित्य और स्वतः प्रमाण हैं', पं. सत्यव्रत सामश्रमी ने अपने ऐतरेयालोचन ग्रन्थ के पृष्ठ १२७ पर लिखा है कि 'ऐसी कौन सी मंत्र संहिता है, जो शाखा नाम से रहित है जिसे महात्मा दयानन्द के अनुसार मूल वेद माना जावे यह हमारी समझ में नहीं आ रहा'।

तात्पर्य यह है कि वर्तमान में सभी वेद संहिताएँ किसी न किसी शाखा के ही नाम से प्रसिद्ध हैं। अतः मूल वेद कौन सी शाखा है उसको कैसे जाना जाय? हमारा निवेदन है कि स्वामी दयानन्द ने इस जटिल समस्या का भी समाधान किया है। उन्होंने जिन शाखा नाम से व्यवहृत संहिताओं को मूल वेद स्वीकार किया है, उनमें ऋग्वेद की शाकल, यजुर्वेद की माध्यन्दिन, सामवेद की कौथुम संहिता है। अथर्ववेद की उस समय शौनक संहिता ही उपलब्ध थी अतः उसे ही ग्रहण कर लिया। इसका कारण यह था कि शाकल्य ने अपनी संहिता के मंत्रों का केवल पद पाठ ही किया है, मंत्रों में कोई घालमेल नहीं किया। अतः स्वामी दयानन्द ने उसका सम्पूर्ण मंत्र भाग स्वीकार कर ऋग्वेद संहिता बना दिया। यजुर्वेद की सभी प्राप्य शाखाओं में से माध्यन्दिन संहिता ही ऐसी थी जिसमें मंत्र भाग पूर्णतया सुरक्षित रखा गया, ब्राह्मण भाग का सम्मिश्रण नहीं था माध्यन्दिन ने कर्मकाण्डीय सुविधा के लिए अनेक स्थानों पर कुछ प्रतीकें जोड़ी थीं, बस इसीलिए वह माध्यन्दिन संहिता कहलाई। स्वामी दयानन्द ने उसकी प्रतीकें स्वीकार नहीं कीं। केवल मंत्र लेकर मूल यजुर्वेद को प्राप्त कर लिया। सामवेद की कौथुम और राणायनीय दो शाखायें प्राप्त थीं। दोनों के मंत्रों में कोई भेद नहीं केवल गायन के ढंग में अन्तर था। अतः उन्होंने कौथुम शाखा को ग्रहण करना उचित समझा। इस पर आगे भी अन्वेषण कार्य होना चाहिये।

जहाँ तक वेदों में आए अनित्य पदार्थों, स्थानों या व्यक्तियों के नामों या अनित्य इतिहास होने के आक्षेप की बात है सो इस विषय पर स्वयं स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में पर्याप्त प्रकाश डाला है।

अनेक वैदिक विद्वानों ने भी इस विषय पर अनेक बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे हैं। इनमें पं ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, युधिष्ठिर मीमांसक, शिवशंकर शर्मा, आचार्य वैद्यनाथ, डा. रघुवीर वेदालंकार आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सबने सप्रमाण सिद्ध किया है कि वेद में अनित्य इतिहास नहीं है। पूर्व मीमांसा प्रथमाध्याय में स्वयं जैमिनि मुनि ने-

१. वेदाँऽचैके सन्निकर्षं पुरुषाख्याः।। १.१.२७

२. अनित्यदर्शनाच्च।। २८

इन दो सूत्रों से पूर्वपक्ष रखकर

१. उक्तं तु शब्दपूर्वत्वम्।। २९

२. आख्या प्रवचनात्।। ३०

३. परं तु श्रुतिसामान्यमात्रम्।। ३१

इन तीन सूत्रों द्वारा समाधान प्रस्तुत किया है, जिसे वहीं देखना चाहिए। भाषा और ज्ञान को मनुष्यकृत कहने वालों से हमारा निवेदन है कि आदि मानव जो सर्वप्रथम उत्पन्न हुए उनमें यदि बोलने का सामर्थ्य था तो शब्द भी अवश्य होंगे।

यदि शब्द नहीं थे तो वे गूँगे होंगे। इसी प्रकार जब उनके कान थे तो ध्वनियाँ भी होंगी, जिनको वे सुनते थे। यदि नहीं सुनते थे तो बहरे होंगे। शब्द दो ही प्रकार के होते हैं, एक ध्वन्यात्मक दूसरे वर्णात्मक। बोलना और समझना वाक् शक्ति है, आदि मानव उससे युक्त होना चाहिए। समझना और विचार करना यह ज्ञान का द्योतक है और ज्ञान भाषा के बिना व्यक्त नहीं होता। अतः बिना ज्ञान के भाषा और बिना भाषा के ज्ञान रह नहीं सकते। अतः यह मानना ही पड़ेगा कि ज्ञान और भाषा आदि मानव के साथ ही आए थे। ये उन्हें दैवी प्रेरणा या ईश्वरीय व्यवस्था से ही प्राप्त हुए थे। यही वेद हैं और अपौरुषेय हैं। भाषाओं का जन्म इसी आदि भाषा से ही होता है। ध्यान रहे संसार की समस्त भाषाएँ भाषा विकास का परिणाम नहीं हैं, ह्रास का परिणाम हैं। भाषा संकोच और अपभ्रंश होकर बढ़ती जाती हैं, कई बार तो मूल शब्द लुप्त हो जाता है और उसके अनेक अपभ्रंश प्रचलित रहते हैं। समस्त भाषाओं का यही हाल है। वे किसी एक मूल भाषा से ही अपभ्रंश होकर बनी हैं। वही आदि भाषा वेद वाणी है। इसीलिए सभी ऋषि, मुनियों की सर्वसम्मत मान्यता रही है कि वेद अपौरुषेय, स्वतः प्रमाण, ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है।

उक्त मंत्र संहिताओं की वेद संज्ञा होने पर तो किसी को आपत्ति नहीं है। सभी सर्वसम्मत हैं। परन्तु कुछ लोग ब्राह्मण ग्रन्थों को भी वेद मानने और उनके भी स्वतः प्रमाण होने का आग्रह करते हैं। प्रमाण के रूप में वे एक सूत्र उपस्थित करते हैं- **'मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेदानामधेयम्'**।

ये लोग इसे कात्यायनकृत श्रौत सूत्र कहते हैं, परन्तु यह कात्यायनीय श्रौत सूत्र में नहीं मिलता। हाँ, कात्यायनकृत कहे जाने वाले प्रतिज्ञा परिशिष्ट में पाया जाता है, किन्तु यह प्रतिज्ञा परिशिष्ट का श्रौत्र सूत्र न होकर प्रतिशाख्य से सम्बद्ध है। अतः विद्वान् इसे कात्यायन कृत नहीं मानते। एक और महत्वपूर्ण विचारणीय बात यह है कि यह सूत्र केवल कृष्ण यजुर्वेदीय श्रौत सूत्रों में ग्रहण किया गया है यथा आपस्तम्ब, सत्याषाढ़, बौधायन आदि श्रौत्र सूत्रों में उपलब्ध है परन्तु उनके भी परिभाषा प्रकरण में प्रहित है। शुक्ल यजुर्वेद, ऋग्वेद और सामवेद से सम्बन्धित किन्ही श्रौत्र सूत्रों में उपलब्ध नहीं होता। इससे विदित होता है कि यह इन्हीं कृष्ण यजुर्वेदियों का ही बनाया हुआ है। परन्तु अनेक आचार्यों ने इसे स्वीकार नहीं किया था, ऐसे प्रमाण भी उपलब्ध हैं। इसी सूत्र पर अपनी आपस्तम्ब श्रौत्रसूत्र की व्याख्या करने वाले हरदत्त और उससे भी पूर्व धूर्तस्वामी ने टिप्पणी दी है कि- **'कैश्चिन्मत्रायामेव वेदत्वमाख्यातम्'**।।

अर्थात् किन्हीं आचार्यों ने केवल मंत्रों की ही वेदत्व कहा है। इससे सिद्ध है कि प्राचीन आचार्य केवल मंत्रों की ही वेद संज्ञा स्वीकार करते थे और इस सूत्र रचना के पश्चात् भी उन्होंने इस परिभाषा को अंगीकार नहीं किया था। शुक्ल यजुर्वेदीयों, ऋग्वेदीयों, सामवेदीयों आदि के यहाँ मन्त्र राशि पृथक् है और ब्राह्मण पृथक् हैं, अतः इनके आचार्यों को इस ऐसे सूत्र की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। उन्हें यह सन्देह ही न था कि कौन भाग मंत्र है और कौन सा भाग ब्राह्मण है।

परन्तु कृष्ण यजुर्वेदियों ने अपनी संहिताओं, शाखाओं में मंत्र और ब्राह्मण का घालमेल कर रखा है, इसीलिए उन्हें ऐसे सूत्र की आवश्यकता हुई। ध्यान देने की बात है कि उक्त सूत्र जहाँ भी है, परिभाषा प्रकरण में ही पठित है। पारिभाषिक संज्ञाओं की रचना तभी की जाती है जब वे लोक में प्रसिद्ध न हों अथवा अन्य शास्त्रों में अन्य अर्थों में प्रसिद्ध हों। जैसे कि पाणिनि मुनि रचित गुण, वृद्धि आदि संज्ञाएँ और योग में प्रयुक्त संयम आदि। परन्तु ये संज्ञाएँ उन्हीं ग्रन्थों में प्रमाण मानी जाती हैं, जिनके लिए बनाई गई होती हैं। अतः मंत्र और ब्राह्मण की वेद संज्ञा भी कृष्ण यजुर्वेदियों के याज्ञिक कर्मकाण्ड तक ही सीमित रहेगी सर्वत्र ग्रहीत नहीं होगी। जिनके श्रौत्र सूत्रों में पठित है, वहीं मान्य होगी सर्वत्र नहीं।

जहाँ तक ब्राह्मण भाग की प्रामाणिकता और अपौरुषेयता का प्रश्न है, सो वह अपौरुषेय तो हैं ही नहीं क्योंकि वे कर्मकाण्ड के आचार्यों द्वारा किये गए मंत्र विनियोगों की व्याख्या और याज्ञिक प्रक्रिया के विधि प्रदर्शन हैं। अतः पौरुषेय हैं। साथ ही इनमें समय-समय पर विनियोजित मंत्रों और प्रक्रियाओं में फेर-फार और उलट-पलट भी किया जाता रहा है और इनमें अनेक अवांछित और अनुचित प्रक्षेप भी घुसेड़ दिए गए हैं। अतः वे वेदों की भाँति प्रामाणिक भी नहीं हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में विभिन्न समयों में हुये राजाओं, ऋषियों, आचार्यों तथा अन्य मनुष्यों के जीवन में घटित घटनाओं का उल्लेख मिलता है अर्थात् अनित्य इतिहास विद्यमान है। इसलिये उनकी स्वतः प्रामाणिकता मानना दुराग्रह मात्र ही है। हाँ, उनके वेदानुकूल भाग अवश्य प्रमाण योग्य होंगे। छल और वितण्डा का आश्रय लेकर सत्य का हनन या उस पर प्रहार करना सज्जन पुरुषों का कार्य नहीं हो सकता।

सा मा सत्योक्तिः परिपातु विश्वतः।।

सीताबाड़ी रोड़, केलवाड़ा
जिला- बाराँ (राज.)

Medical Science in the Vedas

- Ramesh Gupta,
M.D., F.A.C.P., F.A.C.G.
Gastroenterologist, NJ. (USA)

Ayurveda: Definition

Charak Samhita defines Ayurveda as:

हिताहितमसुखं दुःखमायुस्तस्य
हिताहितममानं च
यत्रोक्तमायुर्वेद स उच्चयते।

Ayurveda deals with good and bad life, happy and unhappy life. Explains what promotes health and what affects health adversely.

Healthy and happy person is the one who is devoid of mind and body imbalances, whose senses are perfectly functioning, whose body is full of ojas, tejas, and prana, and can perform all duties without obstacles.

Health: Definition

Sage Sushruta defines health as:

समदोषः समाग्निश्च
समधातुमलक्रियः। प्रसन्नात्मेन्द्रिय
मनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।

सुश्रुतसूत्रस्थान १६/४८

"Person, whose all three humors or Doshas: Vata(air), Pitta(fire) and (water)Kapha are in balance, whose appetite and digestion are in balance; whose seven body tissues (Seven dhatus: rasa, rakta, mansa, meda, majja, asthi and shukra) are functioning normally; whose malas (urine, feces and sweat) are eliminated properly and whose spirit, senses and mind (satva, rajat, tamas), remain full of bliss is considered healthy".

Three Doshas

Dosha can be defined as the biological types or physical constitution. "That which contaminates" is called dosha. Imbalance in dosha causes disease and defect in dhatus, toxins, waste materials, etc.

Vata, Pitta, and Kapha

The Vata or the air element governs inhalation,exhalation, movements, discharges, impulses and the human senses.

The Pitta or the fire element deals with hunger, thirst, digestion, excretion, body warmth and circulation. It also relates to the body strength, energy, youth intelligence and executive abilities.

The Kapha or the water element controls the stability, lubrication, movements, body luster, digestive tract, glands and fluids of the body.

Digestive Fire, Dhatu, & Excretory Functions

Term representative of body metabolism, and comprises of digestion, absorption, and assimilation. Assimilated food turns into dhatus like plasma, blood, muscle, bone, and fat. Muscle, bone, fat, and seminal fluid in men and artava in women.

In Atharva Veda, the 7 dhatus/tissues have been referred to as the Sapta Matram.

These are deemed vital for maintaining perfect health and keeping diseases at bay. Proper excretory functions ensure good health and spirit and increases life span.

Senses, Mind, Soul Harmony

Being holistic in nature, Ayurveda stresses upon the importance of senses being under the control of mind, which should further be controlled by the soul, and not vice versa.

Yoga/meditation is the way to accomplish that goal.

Ayurveda: History

Vedas source of all knowledge.

Knowledge of God and soul given in perfection, and knowledge of nature in seed form including medical sciences.

Rig Veda: There are mantras in this Veda which define the purpose of Ayurveda, qualities of the healer, uses of medications, various parts of the body, surgery,various natural

treatments such as fire therapy, water therapy, wind therapy, sun therapy, hand-touch therapy and yajna therapy. Also reference given to the treatment of poisoning, parasitology, geriatrics and sleep disorders.

Yajur Veda: The mantras in this Veda deal with the qualities and actions of the Vaidya (physician) , names of different medications, parts of the body, geriatrics, and other natural therapies as mentioned in Rg Veda.

Sam Veda: There is very little in Sam Veda about medicine. What is available relates to the qualities and attributes of the healer, few treatments, geriatrics, and how to be energetic.

Atharv Veda: This is the main basis of Ayurveda. The subjects relating to Ayurveda in this Veda are the qualities and actions of Vaidya, parts of body, science of longevity, how to be free of illness, urology, sexual dysfunction, parasitology and other infectious diseases, treatment of poisoning, natural therapies such as sun therapy, water therapy, use of certain poisons in treatment, use of animal products, surgery, etc.

Brahaman granths state that the illnesses are more prevalent during change of seasons. Therefore, doing Yajna 4 times a year (chaturmasa yajna) was prescribed to reduce such illnesses. Also the food ingested was changed based on the season. Subsequent literature is somewhat scratchy until the time of **Aitareya Punarvasu.** One of his students was **Agnivesa** and he wrote Agnivesa Samhita. It is on the basis of this scripture that Sage **Charak** (one who has traveled and learned) wrote his book charak Samhita. The last 17 chapters of Charak Samhita are additions by **Dridhabala.** This book deals with medicine. Similarly, name of **Dhanvantari** is prominent in the field of surgery or Shalya chikitsa. This may have been the basis of the Sushrut Samhita, the main scripture in the field of Shalya Chikitsa in Ayurveda. The last chapter of this book may have been written by **Nagarjuna**. Both Charak and Sushrut (one who has heard well and learned) seem to have existed around in 6th century BC. Next in line was **Vagbhata** (one who is eloquent in communication) who probably existed in 2nd century AD. He summarized and assimilated the works of Charak and Sushrut in the form of his two books. These are Ashtanga Samgraha and Ashtanga hridya.

From 8th to 11th century A.D., there were also a series of scholars who did quality work in the field of Ayurveda. The names of these are, **Madhavakara** who wrote Madhav Nidan, and **Bhavmisra** who wrote Bhava Prakash and **Sarngadhara,** who wrote Sarngadhara Samhita,. These three scholars together have been labeled as Laghu Trayi, or the lesser threes. For next several centuries, very little progress took place in the field of Ayurvedic medicine as India was under great invasions by many foreign forces. However, most of what is available today comes from the original texts and whatever is new, most of it is simply the revival of the original. There has been some research of late, and there are over one hundred Ayurvedic medical schools in India and a few Ayurvedic research institutes as well. Modern medicine was almost nonexistent 400 yrs. ago. There was a statement by **Moliere in 17th century that "physicians are people who poured medicines of which they knew little into the bodies of which they knew less".** Today we are all impressed and dependent on modern medicine for our medical care. Parallel development has not occurred in Ayurveda. Actually the basic approach to health is quite different in Ayurveda. The

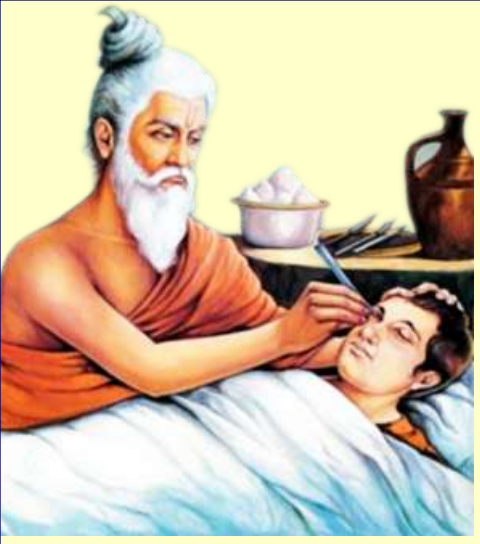

details are as follows.

Ayurveda: 8 Parts

(1) General or Internal Medicine(Kaya Chikitsa): This deals with general ailments impaired by the digestion and metabolism. "Kaya" means digestive fire (agni) and is responsible for digestion and metabolism. From an Ayurvedic perspective when the digestive fire is not functioning properly, it causes diseases. Several infectious diseases are described in Ayurveda and are supposed to be the result of improper digestive function.

(2) Surgery (Shalya Tantra): The original text of Sushruta Samhita lists approximately 101 surgical instruments. Some of surgerical procedures included in this book are rhinoplasty, cataract, C.section.

(3) Paediatrics (Kumara Brutya): This branch deals with prenatal and postnatal baby care as well as the care of a mother before, during and after pregnancy. It also elaborates various diseases of children and their treatments.

(4) Psychiatry (Graha Chikitsa): This branch deals with the study of mental diseases and their treatments. Treatment methods include medicines, diet regulation and yogic methods for treatment of mental diseases and improving mental balance and wellbeing.

(5) Shalakya Tantra (ENT and Ophthalmology): This branch focuses on the areas of the body above the collar bones. These include ear, nose, throat and head and their treatments and cure. This branch also includes dentistry.

(6) Agadatantra (Toxicology): This branch deals with the toxins derived from vegetables, minerals and from animal origins and how to process and remove them. The concept of pollution of air and water in certain places and seasons has been given special consideration. Such pollution is also said to be the cause of various epidemics. It also discusses the proper storage of food etc.

(7) Science of Rejuvenation (Rasayana): This branch which is unique to Ayurveda, focuses on general health and vitality including care for the elderly. Its main aim is to promote the healthy living, with emphasis on both the prevention and cure of diseases. It deals with the promotion of a long and healthy life and discusses how to increase our health, intellect and beauty.

(8) Virilisation Therapy (Vajeekarna): This deals with the science of sexual dysfunction and its prevention and treatment.

Contd.....

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

•सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-

•सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास | भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री | डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

डायबिटीज में तीन काम

डॉ. छैल बिहारी शर्मा

डायबिटीज मधुमेह या शुगर की बिमारी या यूँ कहें, इस रोग में ऊर्जा, शक्ति, पावर, एनर्जी का शरीर में उपयोग नहीं हो पा रहा है वह

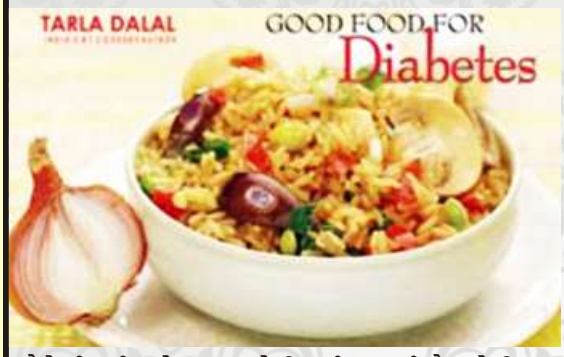

वैसे ही यूरीन के माध्यम से निकली जा रही है। जो निकल नहीं पा रही है वह रक्त में घूम रही है। इस बीमारी को ठीक करने के लिए तीन काम करने हैं। डायबिटीज को तीन तत्व ठीक करते हैं-

(१) भोजनः- ऐसा करें जो एकदम ऊर्जा नहीं देवे। तुरन्त ऊर्जा नहीं दे धीमी गति से ऊर्जा देवे। शरीर को जितनी ऊर्जा की जरूरत हो इनसे ग्रहण कर लेवे अनावश्यक नहीं।

जैसे- (१) अंकुरित मूँग, मेथी, मौठ, मटर, सोया, मूँगफली का सेवन करें।

(२) मिक्स आटे की रोटी, जौ, ज्वार, बाजरा, मक्का, गेंहू, चना।

ऐसे फल खावे जिसमें डायरेक्ट मिठास नहीं है-

जैसे- आँवला, नीबू, जामुन, जामफल, ज्वारा, सेब, अनार, नासपाती, नाग, आलूबुखारा।

ऐसी सब्जियाँ खावे जो सहज पच जावे भारी नहीं हो और गर्मी नहीं करें। जैसे- लौकी, तोरई, ककड़ी, पत्तागोभी, टमाटर, कद्दू, पेठा, परवल।

(२) कसरतः- जो खाते हैं उसको पचा नहीं पाते हैं इसलिए कसरतें जरूर करें। डायबिटीज, शुगर, मधुमेह में ऊर्जा शक्ति को ठीक करने के लिए पाचन की क्रिया को अच्छी करना बहुत जरूरी है, इसके लिए उचित कसरतें करें। इससे ऊर्जा का सदुपयोग शरीर में होने लगेगा और यह ऊर्जा ग्लूकोज लीवर के पाचक रसों एवं पेन्क्रियाज के सहयोग से ग्लाईकोजन में बदलकर शरीर में नव निर्माण कर सकेगी।

(१) जोगिंगः- १० मिनिट तेज गति या मध्यम तेजी से जोगिंग करें या दौड़ लगावें तथा तेज गति से घूमना लाभकारी होता है।

(२) दण्ड बैठक, सूर्य नमस्कार, तैराकी।

(३) कोई भी फिजिकल गेम्स बास्केटबाल, फुटबाल, क्रिकेट, कबड्डी, खो-खो आदि खेले।

(४) योग- उत्तानपादासन, पवनमुक्तासन, नौकासन, भुजंगासन, पर्वतासन, सायकिलिंग, चक्रासन, शवासन, अर्द्धमत्स्येन्द्रासन, मन्डूकासन, धनुरासन।

(५) झाड़ू, पोछा, बर्तन, कपड़े धोना, बागवानी, खेती के काम, शक्ति के काम करें, मेहनत करें।

(३) सम्यक् विश्रामः- ८ से ९ घण्टे की सम्यक् नींद अच्छा भोजन, अच्छी कसरत करने के बाद ही आती है।

तनाव, थकान, हताशा, निराशा, कुण्ठा, लाचारी, बीमारी

में विश्राम अति आवश्यक है। काम, बोझ कई तरह के टेन्शन से मुक्ति के लिए सम्यक् विश्राम जरूरी है। शरीर के अंगो की रिपेयरिंग मेन्टेनेन्स निर्माण विश्राम की अवस्था में ही होती है। इसलिए शरीर को विश्राम अवश्य दें। ये तीनों काम अच्छी तरह से किये तो डायबिटीज से मुक्ति अवश्य मिल जायेगी।

मुख्य चिकित्सक, नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सत्यार्थ-पीयूष

गृहस्थ धर्म

दिनचर्या- गृहस्थ को अपनी दिनचर्या का भी विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। रात्रि के चौथे प्रहर अथवा चार घड़ी रात को उठे। आवश्यक कार्य से निवृत्त हो, धर्म और अर्थ, शरीर के रोगों का निदान और परमात्मा का ध्यान करें। अधर्म का आचरण कभी न करें। अधर्मात्मा मनुष्य मिथ्याभाषण, कपट, पाखण्ड और विश्वासघातादि कर्मों से पराये धन और पदार्थों को लेकर बढ़ता है, धनादि ऐश्वर्य, यान, स्थान, मान आदि प्रतिष्ठा को भी प्राप्त कर लेता है। परन्तु शीघ्र ही नष्ट हो जाता है, जैसे जड़ से कटा हुआ वृक्ष। इसलिए गृहस्थों को उचित है कि पक्षपात रहित होकर सत्य का सदैव ग्रहण करें, असत्य का परित्याग करें। न्याय रूप वेदोक्त धार्मिक मार्ग ग्रहण करें। अन्यों को भी इसी प्रकार की शिक्षा दिया करें। धर्म से धन को कमायें और ऐसे धन को सद्पात्र में ही व्यय करें। अपात्र में धन का दुरुपयोग न करें। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य सत्यभाषणादि तपरहित हैं, बिना पढ़े लिखे हैं और दूसरों के धन पर ही अपना दाँत रखते हैं, उसी पर पलते हैं- यह तीनों प्रकार के अपात्र हैं। यह स्वयं भी डूबते हैं और अपने दाताओं को भी साथ डुबो देते हैं। इस प्रकार गृहस्थ इस लोक और परलोक का सदा ध्यान रखें। धर्म का संचय धीरे-धीरे करते जायें क्योंकि धर्म ही के सहारे से दुस्तर दुःख सागर को जीव तर जाता है।

गृहणी केंद्र बिन्दु

न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते।
गृहं हि गृहिर्णाहीनमरण्य सदृशंमतम्॥१॥

अर्थात्- ईंट, गारे, पत्थर के समूह से बने दीवाल, छत अथवा कक्षों का नाम घर नहीं है अपितु गृहणी की विद्यमानता ही घर है, जिस घर में गृहणी नहीं है, वह घर, घर न होकर केवल जंगल है 'गृहिणी गृहमुच्यते'। पत्नी गृहस्थाश्रम की कीली है। सारा परिवार उसी के इर्द-गिर्द घूमता है। परिवार में पत्नी की ऊँची स्थिति के परिचायक अथर्ववेद के निम्न मंत्र दृष्टव्य हैं-

यथा सिन्धुर्नदीनां साम्राज्यं सुषुवे वृषा॥
एवा त्वं सम्राज्ञ्येधि पत्युरस्तं परेत्य॥
सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्ञ्युत देवृषु।
ननान्दुः सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्वा॥ अथर्व. १४/१/४३,४४

जैसे समुद्र नदियों का राजा है, उसी प्रकार तू पति के घर में साम्राज्ञी अर्थात् महारानी होकर रह। तुझे तेरा श्वसुर घर की महारानी समझे, और देवर तुझे महारानी समझें, तेरी ननदें तेरा शासन मानें और तेरी सास तुझे घर की महारानी समझें। इसी प्रकार स्त्री को योग्य है कि अति प्रसन्नता से घर के कामों में चतुराई युक्त, सब पदार्थों के उत्तम संस्कार तथा घर की शुद्धि रखे और व्यय में अत्यन्त उदार न रहे अर्थात् सब चीजें पवित्र और पाक इस प्रकार बनावे, जो औषधरूप होके शरीर व आत्मा में रोग को न आने दे। जो जो व्यय हो, उसका हिसाब यथावत् रखके पति आदि को सुना दिया करे। घर के नौकर चाकरों से यथायोग्य काम लेवे। घर के किसी काम को बिगड़ने न देवे। -मनु. ५/१५०

- संपादक- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१

शोक समाचार

प्रसिद्ध वयोवृद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री बेगराज आर्य जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज को समर्पित कर दिया था, के निधन का समाचार हतप्रभ कर देने वाला था। आपका निधन आर्य जगत् के निकट अपूरणीय क्षति है।

आर्य समाज, बीकानेर के मंत्री श्री महेश चन्द सोनी के भ्राता श्री

मनोहर लाल आर्य का निधन ८० वर्ष की आयु में दिनांक २६-०६-१४ को हो गया। श्री मनोहर लाल जी सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के विभिन्न पदों पर रहे। उनका निधन आर्य समाज की अपूरणीय क्षति है।

न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से शोक संवेदना प्रकट करते हुए प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर का वेद प्रचार सप्ताह भव्य रूप से सम्पन्न

दिनांक २० से २४ अगस्त २०१४ में उक्त वेद प्रचार का कार्यक्रम अत्यधिक प्रभावशाली रहा। वेद रहस्य को सरलता से प्रस्तुत करने

वाले आचार्यश्री वेद प्रकाश श्रोत्रिय के प्रवचनों ने श्रोताओं के हृदय को जीत लिया। इस अवसर पर वयोवृद्ध आर्यों को सम्मानित करने के क्रम में श्रीमती शारदा गुप्ता, श्री अम्बालाल सनाढ्य, श्री इन्द्र सिंह राणावत व श्रीमती विद्यावती तलदार को सम्मानित किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। दिनांक २४ को पूर्णाहुति के उपरान्त सहभोज का कार्यक्रम भी रखा गया। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री भँवर लाल जी आर्य एवं मंत्री श्रीमती ललिता जी मेहरा ने सबका आभार व्यक्त किया। - श्री रामदयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 September-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

द्रव्यादि पदार्थ और बल की वृद्धि कर शत्रु को जीतने के लिए सिंह के समान पराक्रम करे।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. १५४

महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य